संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-23 अंक- 67
पृष्ठ 8
मंगलवार
24 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- शादी के सीजन में पेस्टल रंग...

विचार- खत्म होते प्राकृतिक स्रोत, किसका...

खेल- शुभमन गिल की आईसीसी से अपील...

भारत-नेपाल की दोस्ती को बड़ा तोहफा : पीमए मोदी ने किया 24 हजार करोड़ नेपाली रुपये पैकेज का ऐलान, बोले-

दोनों देशों का रिश्ता अटूट विश्वास का

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और नेपाल के रिश्तों में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के आर्थिक विकास और पुनर्निर्माण में सहयोग का बड़ा ऐलान करते हुए 24 हजार करोड़ नेपाली रुपये के डेवलपमेंट कोऑपरेशन पैकेज की घोषणा की है। नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह के भारत दौरे के दौरान हुई द्विपक्षीय बैठक में दोनों देशों के संबंधों को और मजबूत बनाने पर चर्चा हुई। संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में पीएम मोदी ने भारत–नेपाल के रिश्तों को श्अटूट विश्वास और अपनेपन का रिश्ताश बताते हुए कहा कि दोनों देशों की खुशियां और चुनौतियां साझा हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने नेपाल को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और वहां पुनर्निर्माण कार्यों को गति देने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने नेपाल में अगस्त में आई



विनाशकारी बाढ़ का जिक्र करते हुए जनहानि पर संवेदना व्यक्त की। साथ ही नेपाल के पुनर्निर्माण और दीर्घकालिक विकास को मजबूती देने के लिए 24 हजार करोड़ नेपाली रुपये के विकास सहयोग पैकेज की घोषणा की। पीएम मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह के पहले द्विपक्षीय विदेश दौरे के लिए भारत को चुनने पर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि यह दोनों देशों की गहरी दोस्ती और आपसी विश्वास को दर्शाता है। पीएम मोदी ने बालेन शाह की दूरदर्शिता और नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि कुछ महीने पहले संयुक्त राष्ट्र में उनके संबोधन से नेपाल के भविष्य को लेकर उनकी सोच की झलक मिली थी। पिछले कुछ घंटों की बातचीत में भी उन्होंने भारत–नेपाल संबंधों के प्रति उनकी स्पष्ट सोच और प्रतिबद्धता को महसूस किया। भारत और नेपाल के ऐतिहासिक संबंधों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दोनों देशों का रिश्ता केवल पड़ोस का नहीं, बल्कि अपनेपन और अटूट विश्वास का है। दोनों देश एक–दूसरे की प्रगति के साझेदार हैं और मुश्किल समय में एक–दूसरे का सहारा बनते हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल की जनता ने इस वर्ष जो ऐतिहासिक जनादेश दिया है, वह वहां की नई पीढ़ी की आकांक्षाओं और उम्मीदों को दर्शाता है। द्विपक्षीय बैठक से पहले हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह के बीच विभिन्न मुद्दों पर बातचीत हुई। इस दौरान दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने और सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की गई। संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस से पहले दोनों प्रधानमंत्रियों ने अयोध्या और नेपाल के जनकपुर को जोड़ने वाली श्सरयू–कमलाश ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। इसे दोनों देशों के बीच धार्मिक, सांस्कृतिक और परिवहन संपर्क को मजबूत करने की दिशा में अहम कदम के रूप में देखा जा रहा है।

सरयू–कमला एक्सप्रेस से मजबूत होंगे भारत–नेपाल के रिश्ते

● योगी बोले,नेपाली श्रद्धालु कर सकेंगे रामलला के दर्शन

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि अयोध्या को नेपाल के जनकपुर से जोड़ने वाली सरयू कमला एक्सप्रेस से दोनों क्षेत्रों के बीच प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों में मजबूती आएगी जिससे नेपाली श्रद्धालु राम लला के दर्शन के लिए आ सकेंगे और भारतीय श्रद्धालु मां जानकी का आशीर्वाद लेने जा सकेंगे। यहां अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आदित्यनाथ ने इस रेल सेवा को दो संस्कृतियों का पवित्र और पौराणिक संगम बताते हुए कहा कि इससे भारत और नेपाल के बीच शताब्दियों पुराने संबंध और मजबूत होंगे। उन्होंने कहा, इस रेल सेवा से नेपाल से



श्रद्धालु सीधे राम लला का दर्शन करने आ सकेंगे, जबकि भारत से श्रद्धालु जनकपुर धाम जा सकेंगे और माता जानकी का आशीर्वाद ले सकेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि दो संस्कृतियों के पवित्र और पौराणिक संगम को आज सरयू कमला एक्सप्रेस के रूप में पुनर्जीवित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत और नेपाल के संबंध आपस में आस्था, लगाव, नदियों और परिवारों में हजारों वर्षों से हैं जिसे रोटी–बेटी का संबंध कहा जाता है। अवध और मिथिला के बीच परंपरागत संबंध को याद करते हुए उन्होंने कहा कि अयोध्या में लोग जनकपुर को अपने रिश्तेदारों का घर मानते हैं, जबकि मिथिला में लोग भगवान राम को पाहुन (दामाद) मानते हैं। उन्होंने कहा कि महर्षि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण का जनकपुर में राजा दशरथ के पास आगमन और वहां से बारात निकलने का जश्न विवाह पंचमी और अन्य त्यौहारों के जरिए आज भी मनाया जाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जहां जनकपुर में राम जानकी विवाह मंडप में विवाह पंचमी के दौरान ये समारोह होते हैं, वहीं अयोध्या में मंगल गीत गाए जाते हैं। योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर आंदोलन में नेपाल के योगदान को यह कहते हुए याद किया कि पड़ोसी देश के संतों, युवाओं, महिलाओं और आम भक्तों के बलिदान को हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दौरान जनकपुर धाम से सैकड़ों भक्त उपहार और गहरी आस्था के साथ अयोध्या आए थे। भारत और नेपाल के बीच गहरे आध्यात्मिक संबंध को रेखांकित करते हुए आदित्यनाथ ने नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर, वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर का संदर्भ दिया और कहा कि ये दोनों एक आध्यात्मिक सेतु से जुड़े हैं। उन्होंने मकर संक्रांति पर नेपाल से गोरखनाथ मंदिर में भेजे जाने वाली खिचड़ी और चौत्र नवरात्रि के दौरान उत्तर प्रदेश में देवीपाटन शक्तिपीठ में नेपाल से श्रद्धालुओं के आगमन का भी जिक्र किया।

दिल्ली प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, जस्टिस बागची बोले- राजधानी में सिर्फ बीएस-6 चलें

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह दिल्ली में केवल उन्हीं वाहनों के प्रवेश को सीमित करने के पक्ष में है जो बीएस–6 उत्सर्जन मानकों का पालन करते हैं। कोर्ट ने कहा कि वह चाहती है कि राष्ट्रीय राजधानी (और संभवतः पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र यानी NCR) में केवल बीएस–6 वाहनों का ही परिचालन हो। यह टिप्पणी दिल्ली में वायु प्रदूषण संकट पर सुनवाई के दौरान जस्टिस जॉयमाल्य बागची ने की। इस दौरान कोर्ट प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर लगाई गई पाबंदियों, और बीएस–6 वाहनों के मालिकों को पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट लेने तथा ईंधन प्राप्त करने में आ रही दिक्कतों पर विचार कर रही थी। न्यायमूर्ति बागची ने टिप्पणी की, हमारा रुख स्पष्ट है, हम दिल्ली में केवल बीएस–6 वाहनों को ही चलने देंगे, भले ही छब्द में ऐसा न हो। यह टिप्पणी तब आई जब एक वकील ने अदालत को बताया कि बीएस–6 वाहनों के संबंध में एक अर्जी दाखिल की गई है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि अधिकारियों ने इन वाहनों के लिए पीयूसी टेस्ट करना बंद कर दिया है। वकील ने दलील दी कि इससे वाहन मालिकों के सामने गंभीर मुश्किलें खड़ी हो गई हैं, और कुछ लोगों को तो ईंधन (तेल) भी नहीं मिल पा रहा है। इस दलील पर प्रतिक्रिया देते हुए, जस्टिस बागची ने बताया कि इन पाबंदियों का मकसद यह सुनिश्चित करना था कि दिल्ली में केवल वही वाहन चलें जो कड़े बीएस–6 उत्सर्जन मानकों को पूरा करते हों। हालांकि, भारत के मुख्य न्यायाधीश (ब्श्र्प) ने कहा कि अदालत इस मामले में कम से कम एक महीने तक यथास्थिति बनाए रखेगी और अभी तुरंत कोई दखल नहीं देगी। सीजेआई ने कहा कम से कम एक महीने के लिए इस मामले में यथास्थिति बनी रहने दें। हम इसमें दखल नहीं देना चाहते। दिल्ली ने अपने श्विंटर एक्शन प्लानश और प्रदूषण–रोधी उपायों के तहत, 1 नवंबर से राष्ट्रीय राजधानी के बाहर रजिस्टर्ड उन पेट्रोल और डीजल वाहनों के प्रवेश पर रोक लगा दी है जो ठै–टप मानक के नहीं हैं। इसके लिए बॉर्डर पर कड़ी जांच की जा रही है।

कर में राहत, फिर भी नहीं बढ़ाया वेतन

कंपनियों पर पीएम मोदी की बात का शशि थरूर ने समर्थन किया

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने प्रधानमंत्री (पीएम) नरेंद्र मोदी की बात का समर्थन किया है। पीएम मोदी ने भारतीय कंपनियों पर सवाल उठाए थे। उन्होंने कहा था कि कंपनियों ने कर (टैक्स) में छूट मिलने के बाद भी रोजगार नहीं बढ़ाए। कर्मचारियों का वेतन भी नहीं बढ़ाया। शशि थरूर ने कहा, देश में रोजगार की स्थिति बेहद खराब है। खासकर पढ़े–लिखे युवाओं के लिए हालात मुश्किल हैं। उन्होंने सरकार के नियमों और भ्रष्टाचार पर भी सवाल उठाए। साथ ही मोदी के पुराने नारे 'न खाऊंगा, न खाने दूंगा' पर तंज कसा। थरूर ने यह बातें केरल के तिरुवनंतपुरम में कहीं। उन्होंने कहा कि कर में राहत मिलने के बाद कंपनियों ने अपना वादा पूरा नहीं किया। प्रधानमंत्री की बात देश की आर्थिक स्थिति की सच्चाई दिखाती है।

कंपनियों ने अपना वादा क्यों नहीं निभाया?

थरूर ने कहा, मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री ने जो कहा, वह सच्चाई है। कंपनियों के



पास इसका अपना बचाव हो सकता है। लेकिन जहां तक मैं उनकी बात समझता हूं, सरकार ने कंपनियों को ज्यादा निवेश करने के लिए कर कम किए। ताकि वे ज्यादा रोजगार दें और वेतन बढ़ाएं। लेकिन कंपनियों ने अपने हिस्से का वादा पूरा नहीं किया। थरूर ने नौकरी तलाश रहे लोगों की परेशानी बताई। उन्होंने खासकर कॉलेज से पढ़कर निकले युवाओं का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि रोजगार की स्थिति पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। थरूर ने कहा, लोग हमें बताते हैं कि नौकरी मिलना बहुत मुश्किल है। उदाहरण के लिए, पहली बार ऐसा हुआ कि आईआईटी के एक छात्र को नौकरी नहीं मिली। मेरा मतलब है कि पहले ऐसी बात सुनने को नहीं मिलती थी। इससे पता चलता है कि रोजगार का माहौल, खासकर कॉलेज से पढ़े युवाओं के लिए, बेहद खराब है। कांग्रेस नेता ने कहा कि अर्थव्यवस्था पर ध्यान देने की जरूरत है। सरकार और कंपनियों के बीच आर्थिक विकास की जिम्मेदारी को लेकर जो बहस चल रही है, उस पर नजर रखनी चाहिए। थरूर ने कहा, अगर प्रधानमंत्री कंपनियों पर सवाल उठा रहे हैं और कंपनियां सरकार की नीतियों पर सवाल उठाना चाहती हैं, तो इस पर नजर रखी जा सकती है। हमारा मानना है कि सरकार कुछ काम बेहतर तरीके से कर सकती है।



PRESS
हमेशा आपके साथ

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

अपनी माटी, मौसम और संस्कार गीतों की लोक परंपरा संजोए रखें: अशोक

करछना। हमारे भारतीय समाज और अपनी सनातन संस्कृति में रचे बसे माटी मौसम और संस्कार गीतों का एक बहुत बड़ा दायरा है।आज के बदलते दौर में जहां मिक्स और रीमिक्स संस्कृति के पर्याय विविध प्रकार के गीतों का चलन सा हो गया है, वहीं अपने इन गीतों की लोक परंपरा को संजोए रखना,नई पीढ़ी के



लोक कलाकारों के लिए अब बहुत जरूरी हो गया है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रमों के संचालक और पारंपरिक गीतों पर शोध कर रहे चर्चित हास्य कवि अशोक सिंह बेशरम ने इस पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बदलाव प्रकृति का अपना एक नियम धर्म है।समय–समय पर हर क्षेत्र में कुछ नया बदलाव भी जरूरी है किंतु इसका यह मतलब नहीं कि हम अपनी पुरखों की परिपाटी और माटी की खुशबू से सदा अनुरंजित अपने घर आंगन,खेत सिवान और मौसमी लोकलालित्य में रचे बसे खास गीतों के प्रति विमुख हो जाएं। विकास की इस श्रृंखला में पाश्चात्य गीतों के मनोरंजन में लिप्त होकर हमें अपनी थाती और अपनी पहचान रहे अपने गीतों को संजोए रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के समाज में पुंसवन,अन्नप्राशन, मुंडन,जनेऊ सोहर जैसे खास सोलह संस्कार गीतों का अब अभाव सा दिखाई पड़ता है।वहीं वैवाहिक कार्यक्रमों के दौरान बारात को भोजन करते समय कभी बहुतायत गाए जाने वाले विविध प्रकार के गारी जैसे गीत भी अब नहीं सुनाई देते। कभी जहां अपने गांव–गांव ठुमरी,दादरा और तीन ताल के बड़े नामी गिरामी गवैया रहते थे वहां अब नए कलाकारों में वैसे गीतों को सीखने और गाने की परंपरा भी सिमट रही है। उन्होंने बताया कि कभी आषाढ़ की पहली बूंद के साथ माटी की महक और गीतों का पुनर्पाठ शुरू होने की परंपरा रही ।यहीं से हमारे बरखा गीतों का भी शुभारंभ हुआ। जिसमें विविध प्रकार के कजरी गीतों के अलावा अन्य लोकगीतों – मल्हार,आल्हा,पुरबी, बंजोरवा कहरउआ,धोबी गीत, तेलिया गीत, मल्लहिया,चनैनी,चवरनांच,पितमा, भरथरी, जोगिया,जोगीरा, पचरा,पंवारा, भरहाई,मंगता, सरवनी, नौवाझकड़, जैसे अनेक गीतों का चलन रहा है। इसी तरह रोपनी,कटनी,मुगौरी,मेला,तिलकी,मायन,बेल्हाई,परछन, घाटो,माडौ,शगुन,तेलचढ़ी, सोहाग,पौपुजी,नटका,विदाई, कोहबर,सोहगैली,बियाह, पूजागीतों की लोकप्रियता रही। मौसमी गीत भी प्रायःखूब लोकप्रिय रहे। वासंतिक परिवेश में फागुनी गीतों की अपनी विशेष रोचकता ने पूरे समाज को तार–तार जोड़ने की परम्परा रही है।इस मौसम में बसंती,फाग बेलवार,बारामासा

झूमर,उलारा,बेलवरिया,डेढ़ताल,ढाई ताल,चहका,चौताल, चौगुन,दुगुन,गलियारा,धमार, बैसवारा जैसे विविध प्रकार के गीत अपने मनोरंजक और गहबर रंग से अनुरंजित रहे। प्रीति,रीति,उल्लास,प्रेम सद्भाव,अनुहार मनुहार,रंग–रिवाज और विविध मान्यताओं और लोकलय से जोड़ने वाले अपनी माटी और मौसम के यही गीत हमारी लोक संस्कृति और परंपरा के पर्याय बन हमारे अतीत एवं पुरखों की विरासत रहे। हो ना हो विशेष पर्वों और मौसमों पर अपनी विरासत रहे ऐसे गीतों को गाने और जीने कि उसे परंपरा को संजोए रखना बहुत जरूरी है।जिससे हम अपनी अतीत के पहचान की इस श्रृंखला में अपनी नई पीढ़ी के बीच अपने माटी मौसम और संस्कार गीतों को जीवन्त रख सकें।

पीएम स्वनिधि सम्मान पुरस्कार समारोह 2026 में प्रयागराज को भारत में प्रथम पुरस्कार, महापौर ने व्यक्त किया हर्ष एवं की सराहना

प्रयागराज। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना के प्रभावी क्रियान्वयन एवं पथ विक्रेताओं के आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए नगर निगम, प्रयागराज को पीएम स्वनिधि सम्मान पुरस्कार समारोहद्2026 में ''नगर निकाय श्रेणी के अंतर्गत भारत में प्रथम पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार द्वारा दिनांक 20 नवम्बर, 2026 को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर प्रयागराज के महापौर श्री उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी जी ने हर्ष एवं प्रसन्नता व्यक्त करते हुए नगर निगम, प्रयागराज, जिला नगरीय विकास अभिकरण (डूडा) एवं पीएम स्वनिधि योजना से जुड़ी समस्त टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इस उपलब्धि को पूरी टीम की मेहनत, समर्पण, प्रतिबद्धता एवं सामूहिक प्रयासों का परिणाम बताते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कार्यों की सराहना की।

महापौर जी ने कहा कि पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत भारत में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होना प्रयागराज के लिए अत्यंत गौरव एवं सम्मान का विषय है। यह उपलब्धि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की परिकल्पना के अनुरूप पथ विक्रेताओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने तथा उन्हें वित्तीय समावेशन, डिजिटल लेन–देन एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ने के लिए किए जा रहे निरंतर प्रयासों का प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि पीएम स्वनिधि योजना ने रेहड़ी–पटरी एवं फुटपाथ पर व्यवसाय करने वाले छोटे व्यापारियों को आर्थिक संबल प्रदान कर उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। इस राष्ट्रीय सम्मान से पूरी टीम का उत्साहवर्धन हुआ है तथा भविष्य में और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिली है। महापौर जी ने विश्वास व्यक्त किया कि नगर निगम, डूडा एवं संबंधित विभागों की टीम इसी समर्पण एवं कार्यकुशलता के साथ आगे भी कार्य करते हुए अधिक से अधिक पथ विक्रेताओं को योजनाओं का लाभ पहुंचाएगी और प्रयागराज को विकास एवं सुशासन के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। भारत में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होना न केवल प्रयागराज के लिए गौरव की उपलब्धि है, बल्कि यह शहर के पथ विक्रेताओं के परिश्रम, आत्मसम्मान, आर्थिक सशक्तीकरण एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का भी सम्मान है।

मौत का कारण स्पष्ट नहीं होने पर दो आरोपियों को जमानत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हत्या के आरोप में जेल में बंद दो आरोपियों को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि प्रथम दृष्टया मेडिकल साक्ष्य अभियोजन की कहानी का समर्थन नहीं करते हैं। आरोपियों के खिलाफ अस्पष्ट और सामान्य आरोप लगाए गए हैं। साथ ही मुकदमे का जल्द निस्तारण होने की भी कोई उम्मीद नहीं है। यह आदेश न्यायमूर्ति विवेक वर्मा ने मुरादाबाद के भगतपुर थाने में दर्ज मुकदमे में मित्रपाल और लकी उर्फ यतेंद्र चौधरी की जमानत अर्जी स्वीकार करते हुए दिया है। मामले में आरोप था कि आरोपियों ने दो अन्य लोगों के साथ मिलकर ईंट के टुकड़े और पाइप से शिकायतकर्ता के भाई पर हमला किया था। उसे भोजपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

खुलासा: जमीन के लिए पत्नी और ससुर के साथ मिलकर नाबालिग भाई की हत्या, गले में मिले काले निशान

प्रयागराज। नगर पंचायत अजुहा वार्ड नंबर चार मढ़िया मई रसूलपुर में एक किशोर (14) की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। रविवार सुबह पश्चिम भैंसईहा तालाब के किनारे उसका शव मिला।

नगर पंचायत अजुहा वार्ड नंबर चार मढ़िया मई रसूलपुर में एक किशोर (14) की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। रविवार सुबह पश्चिम भैंसईहा तालाब के किनारे उसका शव मिला। आरोप है कि जमीन विवाद में बड़े भाई ने अपनी पत्नी और ससुर के साथ मिलकर वारदात को अंजाम दिया। तीनों को गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है।

मृतक छोटू पुत्र रामलखन की भाभी नीता ने पुलिस को बताया कि शनिवार रात करीब आठ बजे वह छोटू के साथ शौच के लिए गांव के बाहर गई थी। वहीं वह उससे अलग हुआ तो वापस नहीं लौटा। यह बात उसने घर आकर परिजनों को बताई। परिजनों ने तलाश शुरू की लेकिन कोई पता नहीं चला। रविवार सुबह छोटू की बहन आंचल और नीता तलाश करते हुए तालाब के पास पहुंचीं तो उसका शव पड़ा मिला।

घटना की जानकारी पर एडिशनल एसपी और सीओ सिराथू सत्येंद्र तिवारी मौके पर पहुंचे। फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए और



शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस के अनुसार पूछताछ में शक गहराया और तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। मामले में मृतक की मां श्यामकली ने तहरीर दी है।

जमीन के बंटवारे का विवाद

छोटू के पिता रामलखन की वर्ष 2022 में कैंसर से मौत हो गई थी। परिवार के पास करीब चार बीघा जमीन थी। पिता के इलाज के दौरान डेढ़ बीघा जमीन बिक गई थी। बची जमीन का बंटवारा पत्नी श्यामकली, चार बेटियों और तीन बेटों के बीच हुआ था। दो बेटे कपूर और राजेश्वर ने अपने हिस्से की जमीन बेच दी थी। श्यामकली और एक बेटी के हिस्से की जमीन भी शादी में बिक गई थी। छोटू और सबसे छोटी बेटी आंचल के हिस्से में करीब आठ–आठ बिस्वा जमीन बची थी। इसी को लेकर विवाद था।

लुधियाना से आया आरोपी भाई

आरोपी राजेश्वर उर्फ टुन्नी लुधियाना में एक निजी कंपनी में काम करता था। उसने बताया कि है कि भाई के लापता होने की सूचना पर वह शनिवार को निकला था और रास्ते में खागा स्थित अपनी ससुराल में रुका था। इसके बाद गांव पहुंचा। आरोपी राजेश्वर की पत्नी नीता के पिता कमलेश को लेकर भी गांव में तरह–तरह की चर्चाएं हैं। लोगों के मुताबिक, कमलेश तांत्रिक का काम भी करता है।

किशोर की हत्या के मामले में जमीन विवाद की बात सामने आई है। शव के गले पर काले निशान मिले हैं। प्रथम दृष्टया गला घोंटकर हत्या करना प्रतीत हो रहा है। आरोपी नीता और राजेश्वर के बयान विरोधाभासी मिलने पर सख्ती की गई तो दोनों ने वारदात स्वीकारी। घटना के वक्त नीता का पिता कमलेश भी मौजूद था। तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पीएम रिपोर्ट आने के बाद साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। – सत्यनारायण, पुलिस अधीक्षक

छोटे भाई की जान से कीमती निकली चंद बिस्वा जमीन

रिश्तों–नातों पर जायदाद भारी है। अजुहा में किशोर के कत्ल में पुरानी कहावत फिर पुष्ट हुई। बड़ा भाई, उसकी पत्नी और ससुर आरोपी हैं, जिन्होंने बचने की बहुत कोशिश की लेकिन अपने ही बुने जाल में उलझ गए। पुलिस के तिकड़मी सवालों ने उन्हें चित कर दिया।

मृतक छोटू की उम्र 14 वर्ष थी। कक्षा तीन तक पढ़ने के बाद छोड़ दिया था। मां श्यामकली, छोटी बहन आंचल, आरोपी बड़ा भाई राजेश्वर का परिवार घर पर रहता था। आंचल और छोटू के हिस्से की जमीन बची थी, जिस पर आंख गड़ी थी। पुलिस ने अभी खुलासा तो नहीं हुआ लेकिन जांच में लगभग यह स्पष्ट हो चुका है कि हत्या जमीन के चक्कर में ही हुई।

बकौल एसपी भाभी नीता से जब घटना की जानकारी की गई और सवाल–जवाब होने लगे तो वह लड़खड़ाने लगी। किशोर के घर न लौटने पर खोजबीन के लिए समुचित प्रयास न करना और पुलिस को सूचना देने में भी तत्परता न दिखाना अस्वाभाविक लगा। फिर जब आरोपी राजेश्वर से पूछताछ हुई तो नीता और उसके बयान अलग–अलग सामने आए। फिलहाल आगे जांच जारी है।

तीन–चार दिन पहले लुधियाना से निकला था भाई

ग्रामीणों के मुताबिक, राजेश्वर लुधियाना में जहां काम करता था, वहां गांव के कुछ अन्य लोग भी काम करते हैं। उनके अनुसार वह तीन–चार दिन पहले ही वहां से घर आने के लिए निकला था लेकिन सीधे गांव नहीं पहुंचा। खागा स्थित अपनी ससुराल में रुक गया था। वहां ससुर कमलेश के साथ मिलकर वारदात की योजना बनाई गई। इसके बाद शनिवार रात नीता छोटू को शौच के बहाने घर से बाहर ले गई। कुछ देर बाद वह लापता हो गया। रविवार सुबह उसका शव तालाब किनारे मिला।

मंत्री नंदी की मां के निधन पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने जताया शोक, घर पहुंचे तमाम नेता

प्रयागराज। मंत्री नंदी की मां के निधन से शोक संवेदनाएं व्यक्त करने के लिए देशभर से लोग प्रयागराज पहुंच रहे हैं। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पत्र भेजकर दुख जताया है तो उद्यमियों, सामाजिक संगठनों और जनप्रतिनिधियों ने बहादुरगंज स्थित आवास पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की माता के निधन पर शोक संवेदनाएं व्यक्त करने का सिलसिला जारी है। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पत्र भेजकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं। वहीं, देश के प्रतिष्ठित उद्यमियों, वैश्य संगठनों, सामाजिक संस्थाओं और जनप्रतिनिधियों ने भी दुख जताया है। मंत्री नंदी के बहादुरगंज स्थित आवास पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त कर रहे हैं।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपने शोक संदेश में लिखा है कि मां का स्नेह, आशीर्वाद और त्याग हर किसी के जीवन की सबसे अनमोल पूंजी होती है। उन्होंने कामना की कि माता की स्मृतियां, संस्कार और स्नेह सदैव परिवार के जीवन में प्रेरणा और संबल बने रहें।

अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक अग्रवाल, महामंत्री राजीव बंसल, साहू कल्याण समिति परमार्थ सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष रविंद्र गुप्ता, श्री कान्यकुब्ज भुर्जी वैश्य सभा प्रयागराज के राष्ट्रीय अध्यक्ष कृष्णदास गुप्ता नाथू और अध्यक्ष योगेश अग्रवाल, निकिता पेपर मिल शामली के अशोक बंसल, रायपुर के सुनील रामदास अग्रवाल, मल्टीकलर स्टील दिल्ली के राजेश गुप्ता, कॉन्टिनेंटल मिल्कोज लिमिटेड



दिनेश कुमार गुप्ता छेदी ने शोक व्यक्त किया।इसके अलावा भारत लोक शिक्षा परिषद की राष्ट्रीय चेयरपर्सन सोनल रासीवासिया, रांची जिला केसरवानी वैश्य सभा के संरक्षक डॉ. प्रेम सागर केशरी, अनिल केशरी और अध्यक्ष प्रदीप कुमार केशरी सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने भी दुख जताया।

देश के विभिन्न शहरों से पहुंचे उद्यमियों ने मंत्री नंदी के आवास पर उनकी माता के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किए और शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त कीं। इनमें रिमझिम इस्पात कानपुर के दिल्ली के दीपक अग्रवाल और अंकुर खंडेलवाल तथा वैश्य इंटरनेशनल एसोसिएशन नोएडा के चीफ कोऑर्डिनेटर दीपक सिंघल शामिल रहे।

वहीं, पूर्व कैबिनेट मंत्री राकेशधर त्रिपाठी, मिर्जापुर के नगर विधायक रत्नाकर मिश्रा, मध्य प्रदेश के त्योंथर विधानसभा क्षेत्र के विधायक सिद्धार्थ तिवारी, बांदा के पूर्व सांसद आरके सिंह पटेल और पूर्व राज्यमंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय ने भी मंत्री नंदी के आवास पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की। प्रतिभा, परिश्रम और हौसले के दम पर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी प्रयागराज की बेटी राखी निषाद अब अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगी। आर्थिक अभाव के कारण नेपाल में आयोजित होने जा रही एशिया–पैसिफिक आर्म रेसलिंग चौम्पियनशिप में प्रतिभाग करने से वंचित होने की आशंका अब समाप्त हो गई है। मातृशोक की घड़ी में भी उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री एवं प्रयागराज शहर दक्षिणी विधायक नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए राखी निषाद को 21 हजार रुपये की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई है, ताकि वह प्रतियोगिता में शामिल होकर प्रयागराज के साथ ही प्रदेश और देश का नाम रोशन कर सकें।

हर्ष फायरिंग के दौरान रिवर्स फायर होने से किशोर घायल

प्रयागराज। उतरांव थाना क्षेत्र के अतरौरा गांव जयमाल के समय हर्ष फायरिंग के दौरान बंदूक की नाली में गोली फंसने से एक किशोर घायल हो गया। यहां थरवई क्षेत्र के मितई का पूरा गांव निवासी संदीप पासी की बरात आई थी। प्रयागराज के उतरांव थाना क्षेत्र के अतरौरा गांव में रविवार देर रात बरात के दौरान हुई हर्ष फायरिंग में एक 16 वर्षीय किशोर गंभीर रूप से घायल हो गया। गोली किशोर के पेट में लगी है। उसे गंभीर हालत में स्वरूपरानी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत नाजुक बताई जा रही है। घटना के बाद बारात में अफरा–तफरी मच गई और सभी बराती मौके से फरार हो गए। थरवई क्षेत्र के मितई का पूरा गांव निवासी दीपक पासी पुत्र सुरजीत की बरात रविवार को उतरांव थाना क्षेत्र के अतरौरा गांव में आई थी। अतरौरा में पुष्पा देवी की बरात आई थी। रात करीब 12 बजे जयमाल का कार्यक्रम चल रहा था। जयमाल स्थल से कुछ दूरी पर एक युवक द्वारा हर्ष फायरिंग की जा रही थी। फायरिंग के दौरान बंदूक की गोली मिस हो गई और नाल में फंस गई। युवक ने उसे दोबारा चलाने का प्रयास किया, तभी गोली रिवर्स होकर पास किशोर के पेट में जा लगी। घायल किशोर की पहचान दीपांशु यादव (16) पुत्र त्रिभुवन, निवासी मौहरिया गांव, थाना थरवई के रूप में हुई है। गोली लगते ही वह जमीन पर गिर पड़ा। परिजन और ग्रामीण आनन–फानन में उसे लेकर स्वरूपरानी अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसकी हालत नाजुक बताई है। इधर, पीड़ित पक्ष की महिला राधा देवी ने बताया कि इस मामले को लेकर पहले से ही उतरांव थाने में प्रार्थना पत्र दिया गया था कि बरात के दौरान कोई हादसा व विवाद न हो। घटना की सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार वर्मा मौके पर पहुंचे और घटना स्थल का निरीक्षण कर जांच पड़ताल शुरू कर दी। पुलिस ने बरातियों के बारे में जानकारी जुटानी शुरू कर दी है। रात में गोली चलने की घटना से गांव में दहशत का माहौल बना रहा। वहीं सुबह दूल्हे के परिजनों की मौजूदगी में विदाई की रस्म पूरी की गई। पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर जांच की जा रही है, दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

विदेश से संचालित साइबर ठगी के मामलों में बड़ा खुलासा कर सकती है पुलिस

प्रयागराज। थाईलैंड, लाओस, चीन और कंबोडिया से संचालित साइबर ठगी में इस्तेमाल होने वाले बैंक खातों की आपूर्ति करने वाले अभियुक्तों की गिरफ्तारी के संबंध में शाम चार बजे पुलिस लाइन में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी देंगे पुलिस उपायुक्त गंगानगर सोनम कुमार। विदेश से संचालित साइबर ठगी के मामलों में प्रयागराज कमिश्नरेट की पुलिस सोमवार को बड़ा खुलासा कर सकती है। दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों थाईलैंड, लाओस, चीन और कंबोडिया से संचालित साइबर ठगी में इस्तेमाल किए जाने वाले बैंक खातों की आपूर्ति करने वाले अभियुक्तों की गिरफ्तारी के संबंध में पुलिस जानकारी देगी। इस संबंध में शाम चार बजे पुलिस लाइन में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएगी। इसमें पुलिस उपायुक्त गंगानगर सोनम कुमार पूरे मामले की जानकारी देंगे।

मौसेरे भाई की शादी में गए युवक का शव पेड़ से लटका मिला

प्रयागराज। युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है। परिजनों के मुताबिक रविवार रात करीब एक बजे अमित कुमार (18) का शव घर के सामने पेड़ पर फंदे से लटका मिला। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया। युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है। परिजनों के मुताबिक रविवार रात करीब एक बजे अमित कुमार (18) का शव घर के सामने पेड़ पर फंदे से लटका मिला। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस को घटना की सूचना सोमवार सुबह करीब छह बजे दी गई। पुलिस के मुताबिक सूचना मिलने से पहले ही शव को फंदे से उतारा जा चुका था।

मृतक के भाई अंशु कुमार के मुताबिक पूरा परिवार घर के नजदीक मौसी के बेटे की शादी में शामिल होने गया था। परिवार के ज्यादातर सदस्य रात करीब 10 बजे घर लौट आए थे, लेकिन अमित दोस्तों से बातचीत करने के बहाने शादी समारोह में ही रुक गया था। इसके बाद रात करीब एक बजे उसका शव घर के सामने पेड़ पर फंदे से लटका मिला।

परिजनों के मुताबिक अमित करीब दो महीने पहले नासिक की एक ऑटो पार्ट्स कंपनी में नौकरी करने गया था। दीपावली के बाद 15 नवंबर को वह घर लौटा था। युवक की मौत किन परिस्थितियों में हुई, इसका पता जांच के बाद ही चल सकेगा।

असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा की उत्तरकुंजी जारी, 29 तक दर्ज करा सकेंगे आपत्ति

प्रयागराज। प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग ने असिस्टेंट प्रोफेसर चयन परीक्षा के मास्टर सेट की प्रोविजनल उत्तरकुंजी अभ्यर्थियों के लिए जारी कर दिया है। अभ्यर्थी आयोग की आधिकारिक वेबसाइट ीजजचेरू//नचमेब.नच.हवअ.पद पर जाकर इसका मिलान कर सकते हैं। आयोग के अध्यक्ष प्रशांत कुमार की ओर से इसकी जानकारी दी गई है। यह परीक्षा 19 और 20 नवंबर को प्रदेश के छह मंडल मुख्यालयों पर आयोजित कराई गई। प्रदेश के अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में 1936 रिक्त पदों के लिए तकरीबन 1.27 लाख अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। आयोग के उप सचिव संजय कुमार सिंह ने प्रश्नगत परीक्षा से संबंधित अभ्यर्थियों को बताया है कि वे आयोग की वेबसाइट पर प्रदर्शित ऑनलाइन लिंक के माध्यम से अपना अनुक्रमांक एवं जन्मतिथि अंकित कर लॉगिन करने के उपरांत मास्टर सेट की प्रोविजनल उत्तरकुंजी के अनुसार अपने उत्तरों का मिलान कर लें। उन्होंने बताया कि यदि किसी अभ्यर्थी को मास्टर सेट की प्रोविजनल उत्तरकुंजी पर कोई आपत्ति हो, तो वे 22 नवंबर से 29 नवंबर की रात 11रू59 बजे तक ऑनलाइन आपत्ति दर्ज करा सकते हैं। उत्तरकुंजी पर प्रति प्रश्न आपत्ति दर्ज कराने के लिए 100 शुल्क निर्धारित किया गया है। विस्तृत दिशा–निर्देश आयोग की आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि निर्धारित ऑनलाइन लिंक के अतिरिक्त अन्य किसी भी माध्यम से प्राप्त होने वाली आपत्तियों पर आयोग द्वारा विचार नहीं किया जाएगा।

शादी में बाधा बन रही थी मां, सिर कूंचकर की हत्या

प्रयागराज। कोखराज थाना क्षेत्र के रसूलपुर गिरसा गांव में राजमती (55) की हत्या का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पति गिरधारी लाल की तहरीर पर पुलिस ने हत्या के मामले प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू की थी। पुलिस ने बताया कि मृतक की छोटी बेटी के प्रेमी ने शादी में बाधा बन रही राजमती के सिर पर ईंट से वार कर हत्या की थी। हत्या की साजिश में छोटी बेटी भी शामिल थी, उसका प्रेम प्रसंग अपनी बड़ी बहन के देवर दिलीप से चल रहा था। दोनों शादी करना चाहते थे लेकिन राजमती इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं थीं। इसी वजह से बेटी ने प्रेमी के साथ मिलकर मां को रास्ते से हटाने की योजना बनाई थी। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार बेटी फोन के माध्यम से प्रेमी को परिजनों की लोकेशन बता रही थी। वह घटना से पहले और वारदात के बाद तक प्रेमी के संपर्क में रही। शुक्रवार रात गिरधारी लाल सरोज अपनी चारों बेटियों और दामाद के साथ भरवारी का दशहरा मेला देखने गए थे। घर में राजमती अकेली थीं, इसी दौरान आरोपी आरोपी ने मौका पाकर उन पर ईंट से हमला कर दिया। सिर पर गंभीर चोट लगने के कारण उनकी मौत हो गई। रात करीब 10 बजे परिजन घर लौटे तो आंगन में उनका खून से लथपथ शव मिला। घटना के बाद पुलिस ने जांच शुरू की। फील्ड यूनिट और डॉग स्क्वायड की मदद से साक्ष्य जुटाए गए।

शहर समता विचार मंच की जबलपुर इकाई की ऑनलाइन काव्य गोष्ठी कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न

जबलपुर। शहर समता विचार मंच की जबलपुर इकाई द्वारा कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर ऑनलाइन काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी रचना सक्सेना की अध्यक्षता में



सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में डॉ. कामना कौस्तुभ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। सारस्वत अतिथि के रूप में छाया त्रिवेदी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में अर्चना मलैया और डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे की गरिमामयी उपस्थिति रही।

काव्य गोष्ठी का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति अंजलि तिवारी ने दी। कार्यक्रम का संयोजन अनीता दुबे एवं संचालन उमा मिश्रा श्प्रीतिश ने किया। इस अवसर पर उपस्थित रचनाकारों ने अपनी भावपूर्ण एवं सुंदर काव्य रचनाओं की प्रस्तुति से आयोजन में चार चाँद लगा दिए।

काव्य पाठ करने वाले रचनाकारों में मंजू तिवारी छाया सक्सेना श्प्रभुश, डॉ. कुमकुम शुक्ला, श्रीमती चंद्र प्रकाश वैश्य, रचना सक्सेना, राजकुमारी रैकवार, प्रभा बच्चन, रश्मि पांडे, श्रीमती कृष्णा राजपूत, गायत्री चौबे, मंजूषा किंजवकर, अनुराधा गर्ग श्दीप्तिश, डॉ. आशा श्रीवास्तव, चंदा देवी स्वर्णकार, डॉ. मुकुल तिवारी, अनीता दुबे, आरती शर्मा एवं शशिकला सेन शामिल रहीं। सभी रचनाकारों ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियों से साहित्यिक वातावरण को भावमय बना दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में रचना सक्सेना ने सभी प्रतिभागियों की रचनाओं की सराहना की। अंत में अनीता दुबे ने आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के 33वां अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन में हिंदी सेवा के लिए 'प्रचारक सम्मान' प्रदान विश्वनाथ के हिंदी सेवी संतोष कुमार महतो को

विश्वनाथ, असम। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा (भारत), गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति , अहमदाबाद तथा राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, सूरत के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 33 वां अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन का दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन सूरत में किया गया। कल घ्अंतिम दिन संध्या 5 बजे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के प्रधानमंत्री डॉ. हेमचंद्र वैद्य के अध्यक्षता में समापन समारोह तथा सम्मान समारोह का आयोजन



किया गया। इस सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. कुबेर कुमावत, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के सहायक मंत्री महेश अग्रवाल, गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद के मंत्री संचालक शरद जोशी, राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, सूरत के संरक्षक अतुल पाठक, शिक्षाविद व साहित्यकार डॉ. सुनील देवधर (पुणे) आदि मौजूद थे। इसके बाद राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के सुदीर्घ हिंदी सेवा करने वाले 'प्रचारक सम्मान' प्रदान किया गया, जिसमें प्रांतीय कार्यालय जोरहाट, असम के पदाधिकारी मदन गुप्ता ने विश्वनाथ के हिंदी सेवी संतोष कुमार महतो के होकर सूत की माला, शॉल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न, पुस्तक आदि से सम्मान ग्रहण किए। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में हिंदी सेवा के लिए विश्वनाथ जिला के पद्मभूषण विजय चंद्र भागवती आदर्श विद्यालय के सहायक अध्यापक (हिंदी), पत्रकार,प्रचारक, कवि, लेखक व विश्वनाथ चारिआलि राष्ट्रभाषा प्रबोध विद्यालय परिचालना समिति के सचिव संतोष कुमार महतो को प्रचारक सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान पाकर महतो ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि हिन्दी भाषा का सेवा करने के लिए महात्मा गांधी द्वारा स्थापित भारत के सबसे बड़े हिंदी संस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा यह सम्मान प्राप्त होना मेरे लिए गौरवान्वित का विषय है। हिंदी भाषा के प्रति मेरा दायित्व आगे और बढ़ गया है, इसके भाषा का प्रचार प्रसार ही मेरा जीवन का लक्ष्य है। इस सम्मान की जानकारी सम्मान समारोह में उपस्थित प्रांतीय कार्यालय के अधिकारी मदन गुप्ता ने वर्चुअल माध्यम से दी। सम्मान पाने के बाद संतोष कुमार महतो बहुत को बधाई का तांता लगने लगा।

उत्तर मध्य रेलवे

ई-निविदा सूचना सं. ई टी-81/विद्युत/कोचिंग/-प्रया0/2026-27 दिनांक- 19.11.2026

ई-निविदा सूचना (इलेक्ट्रिकल कोचिंग ब्रांच)

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मण्डल विद्युत अभियंता (कोचिंग) उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज निम्नलिखित कार्य के लिए निर्धारित फॉर्म पर E-Tender दि0 16.12.2026 समय 15.00 बजे तक आमंत्रित करते हैं। निविदा के सम्बन्ध में मुख्य सूचनायें निम्नवत् हैं- निविदा खुलने की तिथि : 16.12.2026

क्र.सं. 1.	निविदा सं. : ETCHG-81	कार्य की लागत : ₹ 4594768.64

कार्य का विवरण : एलएचबी वातानुकूलित कोचों के आरएमपीयू हेतु डिफरेंशियल प्रेशर स्विच (डीपीएस) आधारित हीटर सुरक्षा प्रणाली की आपूर्ति, स्थापना एवं व्यवस्था।

धरोहर राशि : ₹ 91,900.00	समयावधि : 12 माह	टेन्डर फॉर्म की कीमत : NIL

निविदा का प्रकार : कार्य (खुली निविदा) राजस्व आवंटन

नोटः- 1. उपरोक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) वेबसाइट www.ireps.gov.in पर समय 15:00 बजे टेण्डर खुलने की तिथि तक उपलब्ध है। 2. उपरोक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेंडरों को चाहिये कि वे अपने आपको I.T. Act 2000 के अन्तर्गत CCA द्वारा जारी Digital हस्ताक्षर प्रमाण पत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 3. निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित फाइनेंशियल रेट पेज पर ही विचारणीय हैं। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रभार अन्य किसी भी फॉर्म/लेटर हेड पर यदि संलग्न हैं तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधे तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। 4. संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र निविदाकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिये। 5. निविदा सूचना को निम्नलिखित वेबसाइट पर भी देखा जा सकता है। (a) www.ncr.indianrailways.gov.in. 6. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये IREPS की वेबसाइट की हेल्पलाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 7. ईएमडी का भुगतान केवल ऑनलाइन कई बैंकों की नेट बैंकिंग डेबिट और क्रेडिट कार्ड के माध्यम से किया जाना चाहिए। 8. पात्रता मापदण्ड- निविदा सं. ETCHG-81 के लिए निविदाकार के पास (ओइएम को छोड़कर यदि वे स्वयं सम्मिलित हो रहे हो।) वैध विद्युत लाइसेंस होना चाहिए।

2629/26 (PH)

North central railways @CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

जगत तारन में पुस्तक समीक्षा कार्यशाला, २० पुस्तकों पर हुई चर्चा

प्रयागराज। जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, संघटक महाविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज में राजभाषा एवं मातृभाषा समिति तथा हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'पुस्तक समीक्षा लेखन की प्रविधियाँ' रहा।

विषय विशेषज्ञ के रूप में हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुजीत कुमार सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि पुस्तक समीक्षा केवल पुस्तक का सारांश प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उसकी विषयवस्तु, भाव, भाषा, शिल्प और सामाजिक संदर्भों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना भी है।

कार्यशाला में 20 प्रस्तुतकर्ताओं ने विभिन्न पुस्तकों पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत की।

उपेन्द्र यादव ने ममता कालिया की 'बेघर' में स्त्री के अकेलेपन और आत्मसम्मान की कथा को रेखांकित किया। शिवानी राय ने ममता कालिया की 'जीते जी इलाहाबाद' को इलाहाबाद की स्मृतियों का जीवंत दस्तावेज़ बताया। हिमालय यादव ने उषा प्रियंवदा की 'भया कबीर उदास' को प्रवासी जीवन और अकेलेपन की मार्मिक कथा कहा। अंकिता सिंह ने क्षमा कौल की 'दर्दपुर' में कश्मीर की पीड़ा और विस्थापन के चित्रण पर प्रकाश डाला। आर्या पाण्डेय ने विनोद कुमार शुक्ल की 'दीवार में एक खिड़की रहती है' को आम आदमी के सपनों की सहज अभिव्यक्ति बताया, जबकि अजय कुमार ने नासिरा शर्मा की 'कागज की नाव' में विभाजन



के बाद के जीवन और स्त्री–संघर्ष को रेखांकित किया। बृजेश यादव ने फणीश्वरनाथ रेणु की 'परती परिकथा' को आंचलिकता का श्रेष्ठ उदाहरण बताया। बृजेन्द्र शुक्ला ने गंगा प्रसाद विमल की 'मानुषखोर' में व्यवस्था की क्रूरता के प्रतीकात्मक चित्रण पर चर्चा की।

राज कुमार ने जैनेंद्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' को स्त्री–मन के द्वंद्व का मनोवैज्ञानिक आख्यान बताया। प्रज्ञा पाण्डेय ने गीतांजलि श्री की 'माई' में मां की स्मृतियों और प्रेम की कथा को प्रस्तुत किया। अनीता देवी ने कमलेश्वर की 'कितने पाकिस्तान' को विभाजन की पीड़ा के संदर्भ में नए प्रश्न उठाने वाला उपन्यास बताया। अमृता यादव ने राजेन्द्र यादव की 'सारा आकाश' में मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन के यथार्थ को रेखांकित किया।

विकास पांडेय ने रूद्र प्रसाद मिश्र की 'बहती गंगा' को गंगा तट की संस्कृति का चित्र बताया। शालिनी मौर्या ने रतन कुमारी वर्मा की 'अयोध्या से प्रयागराज वाया इलाहाबाद' को स्मृतियों और इतिहास की यात्रा के रूप में प्रस्तुत किया। पूर्णिमा सिंह ने उषा प्रियंवदा की 'पचपन खंभे लाल दीवारें' में नौकरीपेशा स्त्री के संघर्ष को रेखांकित किया। शिवम् मद्धेशिया ने रणेन्द्र की 'ग्लोबल गांव के देवता' के माध्यम से वैश्वीकरण के प्रभावों पर उठाए गए प्रश्नों की चर्चा की। रिचा शुक्ला ने पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की 'अपनी खबर' को हिन्दी पत्रकारिता के शुरुआती दौर की झलक प्रस्तुत करने वाली कृति बताया। शशांक आनन्द ने धनंजय चोपड़ा की 'इलाहाबादी लंतरानी' को इलाहाबाद की बोली, मंडियों और गंगा–जमुनी संस्कृति का दस्तावेज़ बताया। उनकी प्रस्तुति को विशेष सराहना मिली। मुस्कान पाण्डेय ने अमृतलाल नागर की 'मानस का हंस' को तुलसीदास के जीवन पर आधारित महान उपन्यास बताया, जबकि सुधा कुमारी ने काशीनाथ सिंह की 'रेहन पर रग्घू' में काशी की गलियों और आम जनजीवन की झलक प्रस्तुत की। कार्यशाला का संचालन डॉ. प्रमा द्विवेदी ने किया तथा स्वागत वक्तव्य हिन्दी विभाग की संयोजिका प्रो. रतन कुमारी वर्मा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में हिन्दी विभाग की शिक्षिकाएँ प्रो. अंशुमाला मिश्रा, डॉ. विजयलक्ष्मी, डॉ. सुकीर्ति मिश्र, डॉ. फातिमा नूरी एवं कस्तूरी भारद्वाज की विशेष उपस्थिति रही। इसके साथ ही हिन्दी विभाग के शोधार्थियों, अन्य विभागों के शोधार्थियों तथा बड़ी संख्या में छात्राओं ने सहभागिता की।

कार्यशाला सेमिनार हॉल में प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित हुई।

मथुरा में भीषण सड़क हादसाः खड़े ट्रक में पीछे से घुसी कार, मां–बेटे समेत चार की मौत, पांच घायल

रातभर दर्शन और परिक्रमा के बाद बरसाना से रमणरेती जा रहा था मध्यप्रदेश का परिवार, झपकी आने से हादसे की आशंका

मथुरा। जनपद के थाना जैंत क्षेत्र में सोमवार सुबह नेशनल हाईवे पर एक दर्दनाक सड़क हादसे में चार लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। तेज रफ्तार स्विफ्ट कार सड़क किनारे खड़े ट्रक में पीछे से जा घुसी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार लोग बुरी तरह फंस गए। मृतकों में दो महिलाएं और दो बच्चे शामिल हैं। हादसे के बाद घटनास्थल पर चीख–पुकार मच गई। जानकारी के अनुसार, मध्यप्रदेश के भिंड निवासी एक परिवार मथुरा–वृंदावन दर्शन के लिए आया हुआ था। सोमवार सुबह करीब 7रू30 बजे परिवार बरसाना से रमणरेती की ओर जा रहा था। थाना जैंत क्षेत्र में सनसिटी के पास सर्विस लेन पर खड़े ट्रक में उनकी स्विफ्ट कार पीछे से टकरा गई। कार में चालक देवाशीष सहित नौ लोग सवार थे।

हादसे में देवाशीष के चार वर्षीय बेटे रुद्र, उनकी मामी रूबी (32), रूबी के दस वर्षीय बेटे कान्हा और रूबी की सहेली ज्योति (30) की मौत हो गई। वहीं देवाशीष, उनकी मां आशा देवी, पत्नी गिरजा देवी, पांच वर्षीय बेटी गौरी और ज्योति की 12 वर्षीय बेटी पलक घायल



रूबी मृतक | कान्हा मृतक | ज्योति मृतक | रुद्र मृतक

हो गए। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से कार में फंसे घायलों को बाहर निकलवाकर अस्पताल पहुंचाया। सभी घायलों को सर्वोदय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इनमें एक की हालत गंभीर बताई गई है।

''रातभर दर्शन और परिक्रमा, चालक को झपकी आने की आशंका''

प्रारंभिक पुलिस जांच में सामने आया है कि परिवार ने रातभर मथुरा–वृंदावन में दर्शन और परिक्रमा की थी। इसके बाद सुबह बरसाना से रमणरेती जाते समय यह हादसा हो गया। आशंका जताई जा रही है कि लगातार जागने के कारण कार चला रहे देवाशीष को झपकी आ गई, जिससे तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े ट्रक में पीछे से जा घुसी। हालांकि हादसे के वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है।

''डीएम–एसएसपी ने घटनास्थल और अस्पताल पहुंचकर लिया जायजा''

हादसे की सूचना मिलते ही जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार घटनास्थल पर पहुंचे। अधिकारियों ने दुर्घटना की जानकारी लेने के साथ ही राहत एवं बचाव कार्य का जायजा लिया। इसके बाद दोनों अधिकारी अस्पताल पहुंचे और घायलों का हालचाल जाना। जिलाधिकारी ने घायलों को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने के निर्देश देते हुए कहा कि उनके इलाज का पूरा खर्च सरकार वहन करेगी।

''मुख्यमंत्री ने की आर्थिक सहायता की घोषणा– मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे में मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए प्रत्येक मृतक के परिजन को डेढ़–डेढ़ लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। हादसे से मध्यप्रदेश के भिंड में रह रहे परिवार और परिचितों में शोक की लहर है।

अमित दुबे बने उरुवा के नवागंतुक खंड शिक्षा अधिकारी

सोमवार को बीआरसी उरुवा कार्यालय पहुँचकर किया कार्यभार ग्रहण

प्रयागराज / मेजा। विकास खंड उरुवा के नवागन्तुक खंड शिक्षा अधिकारी अमित दुबे ने कल सोमवार को बीआरसी उरुवा के कार्यालय पहुँचकर अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया। कार्यालय के कर्मचारियों व ब्लॉक के समस्त एआरपीगण, शिक्षकों एवं विभागीय सहयोगियों ने नवागन्तुक खंड शिक्षा अधिकारी उरुवा अमित दुबे का जोरदार स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं। नवागन्तुक बीईओ अमित दुबे से शिक्षकों ने आशा व्यक्त की कि उनके कुशल नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं सकारात्मक कार्यशैली से विकास खंड उरुवा की शैक्षिक गतिविधियों को नई दिशा और गति मिलेगी। उनके नेतृत्व में परिषदीय विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता संवर्धन, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, विद्यालयों में बेहतर वातावरण निर्माण तथा शासन की विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को और मजबूती मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक और अधिकारी के बीच समन्वय, संवाद एवं सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सभी एआरपीगण एवं शिक्षकों ने विश्वास व्यक्त किया कि नवागत खंड शिक्षा अधिकारी के मार्गदर्शन में शिक्षकों की समस्याओं का सकारात्मक समाधान, विद्यालयों की शैक्षिक प्रगति, बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार तथा विभागीय कार्यों को बेहतर ढंग से संपादित करने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएंगे। नवागत खंड शिक्षा अधिकारी अमित दुबे के आगमन से विकास खंड उरुवा के शैक्षिक परिवार में नई ऊर्जा, उत्साह एवं उम्मीद का संचार हुआ है। शिक्षकों ने उनके सफल कार्यकाल की मंगलकामना करते हुए पूर्ण सहयोग और सहभागिता का आश्वासन दिया। ततपश्चात नवागन्तुक बीईओ ने अपने कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के साथ एक बैठक कर उनसे ब्लॉक के कार्यों के बारे में जानकारी तथा विभागीय कार्यों को जल्द से जल्द पूरा करने के आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उक्त अवसर पर ब्लॉक के एआरपी राजेश मिश्रा, अजीत मिश्रा, जगदीश मिश्रा, रामानंद शुक्ला व प्रमोद शुक्ला तथा बीआरसी कार्यालय उरुवा के लेखाकर कृष्ण कुमार शुक्ला, शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश टीम के वॉलीबाल सलेक्टर एवं कोच मुकेश शुक्ला, आशीष पांडेय, पूजा यादव, ओम प्रकाश, विजय कुमार, दिलीप कुमार सिंह, चंद्र विजय सिंह, बब्बू राम, रोहन यादव, सुधांशु कुमार व राहुल कुमार आदि ने नवागन्तुक बीईओ का कार्यकाल पहुँचने पर स्वागत एवं अभिनन्दन किया।



सूर्य है नदिया तीरे

(छप्पय)

फिसल रहा है वक्त हाथ से धीरे –धीरे।
संध्या आती पास सूर्य है नदिया तीरे।
ढलती जाती धूप छाँव अति लम्बी होती।
लहर कर रही खेल रश्मियाँ रौनक खोती।
जीवन के इस साँझ में मन का पंछी मौन है।
बीते पल की याद में ठहरा अब तक कौन है।।

संध्या का हर रूप लगे अति मनहर मनहर।
आशाओं की भोर उड़ेले झोली भरभर।
दिन की मधुर थकान हवाओं में मिल जाती।
प्रकृति रात्रि की शान्ति गोद में लेकर आती।
तनिक ठहर कर सोचिये क्या खोया क्या पा लिया।
जीवन के इस खेल ने किसको कब क्यों क्या दिया।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

बंगाईगांव छठ पूजा सांस्कृतिक महोत्सव में आ रही है कल्पना पटवारी

बंगाईगांव। असम की बेटी और भोजपुरी गानों की प्रसिद्ध गायिका कल्पना पटवारी 24 नवंबर को बंगाईगांव में कार्यक्रम करने आ रही है। पूर्वोत्तर बिहारी परिषद द्वारा आयोजित छठ पूजा सांस्कृतिक महोत्सव– 2026 ओल्ड कॉलोनी स्थित रेलवे फील्ड में आयोजित होने जा रही है । इस कार्यक्रम को लेकर नगरवासियों में काफी उत्साह है। कल्पना पटवारी ने 32 भाषाओं में गाना गा कर विश्व में अपनी पहचान बनाई है, उनके गाए छठ गीत काफी लोकप्रिय हुए हैं। इसी गीत को सुनने के लिए छठ पूजा के उपरांत आयोजित इस कार्यक्रम के लिए पूर्वोत्तर बिहारी परिषद, बंगाईगांव ने अच्छी खासी तैयारी कर रखी है। पूर्वोत्तर बिहारी परिषद के अध्यक्ष श्री रॉय रंजीत सिंह, सचिव श्री राजेश रॉय, सांस्कृतिक सचिव श्री उपेंद्र प्रसाद के नेतृत्व में किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की जानकारी देते हुए परिषद के सदस्य श्री आलोक यादव ने बताया कि श्रोताओं में अलग ही उमंग है। स्थानीय प्रशासन भी काफी सहयोग कर रही है।



सी.एम.पी.महाविद्यालय में कवि सम्मेलन एवं मुशायरा का आयोजन

प्रयागराज। प्राचीन इतिहास विभाग एवं राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में कवि सम्मेलन एवं मुशायरा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती वंदना से हुआ तदुपरांत प्रोफ.अर्चना खरे ने अतिथियों के स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जस्टिस नीरज तिवारी पूर्व न्यायमूर्ति, इलाहाबाद हाई कोर्ट, एवं विशिष्ठ अतिथि श्री प्रकाश शुक्ल, रिटायर्ड आई. एस. थे। प्रतिभाग कर रहे डॉ. शिवम हथगामी ने अपने काव्य पाठ ष्मेरे कुछ दोस्तों के बातों में पावं होता है, सर नहीं होती डॉ.विन्रम सेन ने प्रेम को परिभाषित करते हुए कहा कि निगाहे जीत ले जब मन इसी को प्यार कहते हैं



उन्होंने अपने गीत 'शहर शहर गांव गांव बनते बिगड़ते हैं लोग' से वक्ताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. अम्बुज कमल ने अपने कविता झुमका नहीं दिखता है से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। अभिजीत मिश्रा ने वीर रस में देशप्रेम की भावना से ओत प्रोत कर दिया। उभरते हुए कवि कुमार विकास ने प्रेम एवं विरह वेदना को अपने काव्य पाठ से उद्धृत किया।अम्बुज ऊषा नंदन जी ने श्तुम्हें तुम से चुराया जा रहा है, के माध्यम से अपने काव्य को रखा। उत्तर प्रदेश राज्य साहित्य परिषद की सचिव डॉक्टर सुधा सिंह और राम राज भारतीभी काव्य पाठ किया और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच संचालन डॉ. अम्बुज कमल ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ आलोक सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ. सुधा मिश्रा, प्रो सरोज सिंह, प्रो. आर बी एल श्रीवास्तव, प्रो. भूपेश त्रिपाठी, प्रो. आभा त्रिपाठी नीरज सिंह और अन्य शिक्षकगण और विद्यार्थी मौजूद थे।

उत्तर मध्य रेलवे

पत्रांक: 164/Med/INV/X RAY/2026/1 दिनांक: 20.11.2026

अभिरुचि की अभ्युक्ति

केन्द्रीय चिकित्सालय, उ0म0रे0, प्रयागराज में बाह्यस्रोतों द्वारा एक्स-रे की सेवाएँ प्रदान करने हेतु विज्ञापन ।

केन्द्रीय चिकित्सालय, उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद में चिकित्सा निदेशक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज द्वारा बाह्यस्रोतों द्वारा जाँच की सेवाएँ प्रदान करने हेतु सेन्टर संचालकों से 'अभिरुचि की अभ्युक्ति' विज्ञापन का आमंत्रण (प्रयागराज के नॉन-एनबीएल/एनबीएल सीजीएचएस-2024 के अनुसार) किया जा रहा है। सभी इच्छुक सेन्टर संचालकों से अनुरोध है कि विज्ञापन प्रकाशित होने के 10 दिनों के अन्दर सभी कार्य-दिवसों पर पूर्वाह्न 11:00 बजे से अपराह्न 5:00 बजे तक केन्द्रीय चिकित्सालय, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज के कार्यालय में उपलब्ध "ईओआई" के निर्धारित प्रोपफार्मा में भरकर जमा कर दें। ऐसा प्रोपफार्मा उत्तर मध्य रेलवे के वेबसाइट में भी उपलब्ध है। प्रार्थना-फार्म में उपलब्ध सभी मापदण्ड, निबंधन एवं शर्तों के अनुसार उपलब्ध कार्य का विवरण दें।

कृते चिकित्सा निर्देशक, केन्द्रीय चिकित्सालय, उ0म0रे0/प्रयागराज।

2641/26(AK)

North central railways @CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

ई-प्रापण निविदा सूचना संख्या 33/2026 दिनांक: 18.11.2026

ई-प्रापण निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरि0 मंडल सामग्री प्रबंधक, उ.म.रे., प्रयागराज निम्नलिखित मदों के लिये ई-प्रापण निविदा आमंत्रित करते हैं।

निविदा सं.	विवरण	मात्रा	ई.म.डी.(₹)	निविदा खुलने की तिथि
19267853	आरडीएसओ विनिर्देश के अनुसार 13 व्यक्तियों की क्षमता (884 किलोग्राम) वाली विद्युत चालित यात्री लिफ्ट (जी+6)	02 नग	68,200/-	14.12.2026

नोटः (1) उपरोक्त सभी ई प्रापण निविदाओं का पूरा विवरण IREPS वेबसाइट https://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। (2) उपरोक्त निविदाओं हेतु ई-बिड के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रारूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। वेन्डरों को चाहिए कि वे अपने आपको I.T. Act 2000 के अन्तर्गत CCA द्वारा जारी Class III Digital हस्ताक्षर प्रमाण पत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। (3) संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र हस्ताक्षरित होने चाहिये। (4) निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित फाइनेंसियल रेट पेज पर ही विचारणीय हैं। दरें तथा अन्य वित्तीय भार अन्य किसी भी फार्म /लेटर हेड पर यदि संलग्न हैं तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधे तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। (5) उपरोक्त निविदा सूचना को उत्तर मध्य रलवे की वेबसाईट https://www.ncr.indianrailways.gov.in पर अपलोड कर दिया गया है। (6) किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये IREPS की वेबसाईट की हेल्पलाइन से सम्पर्क किया जा सकता है।

2632/26 (MG)

North central railways @CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय.....

हाशिए पर बसपा, असमंजस में दलित समाज

'कांशी तेरी नेक कमाई, तूने सोई कौम जगाई'। इस नारे ने दलित चेतना को राजनीतिक जुबान दे दी। लेकिन कभी–कभी शोर से ज्यादा, किसी की खामोशी अखरती है। यही हाल बसपा की खामोशी को लेकर दलित समाज का है। वह पार्टी, जो कांशीराम के नेतृत्व में उनकी लड़ाई लड़ी, उन्हें अस्तित्व और अस्मिता का पाठ पढ़ाया, आज खामोशी से अपना पतन देख रही है। आज बसपा समर्थक सोच रहे होंगे, 'मायावती तेरी अगुवाई, तूने बसपा पार्टी डुबाई'। उत्तर प्रदेश में बसपा और दलित राजनीति को इस आलोक में देखना होगा। उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक बार फिर से चुनावी माहौल गर्म हो गया है। एक बार फिर से जाति आधारित गोलबंदी जोर पकड़ती जा रही है। पर इस बार की तस्वीर थोड़ी अलग है। सभी दलों के पारंपरिक मतदाता नैतिक और राजनीतिक पशोपेश में हैं। भाजपा अपने सवर्ण मतदाताओं को यू.जी.सी. एक्ट और उपेक्षा से हुई नाराजगी दूर करने में लगी है। सपा ओ.बी.सी. और मुस्लिम मतदाताओं को वापस लाने के लिए प्रयासरत है। कांग्रेस अपनी खोई जमीन तलाश रही है। अखाड़े में कुछ नए खिलाड़ी भी खम ठोंक रहे हैं। ओवैसी चुनावी पर्यटक बनकर आए हैं, तो टूरिस्ट गाइड की तरह चंद्रशेखर ने उन्हें लपक कर चुनावी गठबंधन बना लिया। एक 'नई' और 'न्यायपूर्ण' सामाजिक व्यवस्था का निर्माण बसपा की विचारधारा की आधारशिला है। एक राजनीतिक शक्ति के रूप में बसपा के गठन ने सामाजिक न्याय की अवधारणाओं को पुनर्परिभाषित करने में मदद की। बसपा का इतिहास कांशीराम से शुरू होता है। अंततरू 14 अप्रैल, 1984 को कांशीराम ने दलितों और पिछड़ों को एक मजबूत राजनीतिक मंच प्रदान करने के लिए बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की स्थापना की। यह उत्तर प्रदेश और भारत की जाति–आधारित पहचान की राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ था। प्रारंभ में अधिकांश वामपंथी और प्रगतिशील शक्तियों ने बसपा की यह कहकर उपेक्षा की कि इसका राजनीतिक सत्ता जीतने के अलावा कोई अन्य लक्ष्य नहीं दिखता। वास्तव में, कांशीराम ने जानबूझकर कोई पारंपरिक आर्थिक कार्यक्रम अपनाने की बजाय स्पष्ट सामाजिक एजैंडा रखा। बसपा ने सभी दलितों और वंचितों को 'बहुजन' श्रेणी के तहत एकजुट कर 'हमें शासक वर्ग बनना है' के आंबेडकरवादी नारे को बुलंद किया। बसपा ने एक–सूत्री कार्यक्रम की वकालत की–'सरकार, नौकरशाही और शैक्षणिक संस्थानों में सभी समूहों के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व'। बसपा ने दलितों को 'कुचले और अपमानित जनसमूहों के समुदाय' के रूप में परिभाषित किया, जो केवल भौतिक लाभों से नहीं बल्कि 'स्वयं की' राजनीतिक सत्ता प्राप्त करके ही मुक्त हो सकते हैं। जहां गरीब दलित सामाजिक सम्मान और राजनीतिक प्रतिनिधित्व दोनों से वंचित हैं, वहीं गरीब ब्राह्मण राजनीतिक रूप से हाशिए पर महसूस कर रहे हैं। यह स्पष्ट हो गया कि 'बहुजन' श्रेणी स्वयं आंतरिक विरोधाभासों से ग्रस्त है। विशेष रूप से, ओ.बी.सी. (अन्य पिछड़ा वर्ग) का एक बड़ा हिस्सा, जिसमें यादव, कुर्मी और लोध शामिल हैं, समाजवादी पार्टी और भाजपा की ओर चला गया है। आज दलितों पर हिंसा और अत्याचार के मामले में ये समुदाय अग्रणी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि–स्वामी ओ.बी.सी. जातियों और भूमिहीन दलितों के बीच आध्थक और सामाजिक संघर्ष ने 'बहुजन एकता' की अवधारणा को कमजोर कर दिया है। ओ.बी.सी. के उभरते कृषक वर्ग ने शूद्रों के प्रभुत्व और दमन की संस्कृति को जारी रखा, क्योंकि वे भी सस्ते श्रम बल का लाभ उठाना चाहते थे। उत्तर–औपनिवेशिक भारत में दलितों को अभी भी उच्च जाति और भूमि मालिक किसान मध्यवर्ती जातियों की दया पर छोड़ दिया गया था। इस प्रकार उत्तर प्रदेश के समाज ने एक नया 'उत्पीड़कों का वर्ग' देखा। इसके अलावा, दलितों के भीतर भी उप–जातीय विभाजन (जैसे जाटवध्चमार बनाम गैर–जाटव जैसे पासी, वाल्मीकि, धोबी आदि) उभरने लगे, जिससे दलित राजनीति में बिखराव आया है। उत्तर प्रदेश में पहचान की राजनीति के इस विकासवादी चरण के दौरान, बसपा में दीर्घकालिक दलित राजनीति के लिए रोडमैप तैयार करने में राजनीतिक परिपक्वता का अभाव है। नेतृत्व शैली के संदर्भ में, कांशीराम के बाद मायावती पार्टी की एकमात्र और निध्ववाद सर्वोच्च नेता के रूप में उभरी हैं। पार्टी के भीतर कोई भी निर्णय, चाहे वह टिकट वितरण हो, गठबंधन बनाना हो या मंत्रियों की नियुक्ति हो, अंतिम रूप से मायावती द्वारा ही लिया जाता है। आलोचक अक्सर उनकी इस कार्यशैली को 'तानाशाही' या 'व्यक्ति–पूजा' कहकर आलोचना करते हैं, क्योंकि पार्टी में दूसरी पंक्ति का कोई स्वतंत्र नेतृत्व विकसित नहीं होने दिया गया।

खत्म होते प्राकृतिक स्रोत, किसका दोष!

सुरेंद्र बांसल

केंद्र को अब पारदर्शी चुनावी फंडिंग प्रणाली पर काम करना चाहिएसर्वोच्च न्यायालय को बधाई चुनावी बांड रद्द करने के आदेश से लोकतंत्र मजबूत हुआ

एक समय ऐसा भी था जब हमारे शहरों, कस्बों और गांवों में तालाब, पोखर एक पवित्र सार्वजनिक सम्पदा की तरह संभाल कर रखे जाते थे। प्रतिवर्ष इन जलकोषों की साफ–सफाई और गाद निकालने का काम समाज खुद करता था। इन जलस्रोतों से निकलने वाली चिकनी मिट्टी के अनेक उपयोगों के उपरान्त इसे खाद के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन जलनीतियों के किताबी झंडाबरदारों ने पोखर, तालाब, कुंओं जैसी बेहद किफायती प्रकृति सम्मत परियोजनाओं की भरपूर उपेक्षा कर इन्हें अनुपयोगी ही मान लिया। आजादी के बाद से अब तक बनी तमाम जलनीतियों की प्रमाणिकता का अंदाजा मात्र इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब तक किसी सरकार ने ऐसा कोई प्रामाणिक सर्वेक्षण नहीं करवाया कि देश में 'पानी' आखिर है कितना। प्रतिवर्ष बिगड़ते हालात के बावजूद हम कभी अपने प्राकृतिक जल संसाधनों की चिंता नहीं करते, बल्कि उनका उपभोग या दुरुपयोग इतनी लापरवाही से कर रहे हैं, मानो कोष रूपी ये स्रोत कभी समाप्त ही नहीं होंगे। मोटे हिसाब से देखें तो देश भर में घरेलू उपयोग और सिंचाई के लिए जितना पानी रोजाना खर्च होता है, उससे कई गुणा अधिक पानी तो प्रतिदिन हमारे–आपके वाहनों की धुलाई सफाई में व्यर्थ हो रहा है, वह भी पीने योग्य मीठा पानी। इसके लिए हम जब कोई नियम, कायदा, कानून, नीति वगैरह ढूंढ़ेंगे तो बेशर्मी के ठेंगे के सिवा किसी भी दफ्तर या विभाग में कुछ नहीं मिलेगा। अगर हम सिर्फ हरियाणा, पंजाब और राजधानी दिल्ली की जलनीति समझें तो रोना आता है। जिस हरियाणा पंजाब में जंगल आज नाम मात्र बचे हों, वहां की धरती आज लगभग 30 लाख सबमध्सबलों की शर–शैय्या पर टिकी है। जिसमें से अकेले पंजाब में ही साढ़े 18 लाख सबमर्सिबल दिन रात भू–जल उलीच रहे हैं। इन दोनों राज्यों के लगभग 70 प्रतिशत भू–जल क्षेत्र डार्क जोन में हैं। राजधानी दिल्ली की हालत तो और अधिक दयनीय है। आज दिल्ली के पास कोई भी प्राकृतिक संसाधन अपना नहीं, जबकि अंग्रेजों के आने से पहले तक यहां 750 के लगभग तालाब थे। दिल्ली या पानी चोरी करती है या संसाधन खरीदती है। दिल्ली के शौचालयों के लिए नित्य–क्रम मेरठ से खींच कर लाई गई गंगा मैया निपटाती हैं। प्रतिवर्ष फरवरी–मार्च में दिल्ली में पानी की खूब किल्लत होने लगती है। दिल्ली के अनेक क्षेत्रों में सरकारों के खिलाफ खूब घड़े–बाल्टियां फूटते हैं, लेकिन मजा देखिए कि दिल्ली में तालाब–बावडियां, पोखर भले निपटा दिए हों, लेकिन अधिकांश नेताओं के घरों में छोटे–बड़े 'स्विमिंग पूल' अवश्य मिल जाएंगे। और पानी के टैंकर अब सरकारों द्वारा संरक्षित 'माफिया' की श्रेणी में आते हैं। प्रत्येक बनने वाली नीति का आध्ार मात्र इतना भर होना चाहिए कि वह प्रकृति सम्मत हो। आध्थक और सामाजिक विकास का रूप कैसा होना चाहिए, ये नीति निध्ारिकों को स्पष्ट होना ही चाहिए। आज हमने अपने आस–पास तथाकथित विकास के नाम पर कुछ ऐसा ढांचा रच लिया है, जो हमें अपने आस–पास के पर्यावरण से जोडने की बजाय तोड़ता अध्कि है। विज्ञान और तकनीक में बढ़ती हमारी योग्यता ने भले ही हमें तकनीकी रूप से साक्षर बनाया हो लेकिन प्रकृति से तालमेल बिठाने के मामले में हम लगातार निरक्षर होते चले गए हैं। एक समय पंजाब में 1700 तालाबों का जिक्र मिलता है लेकिन आज पंजाब की हालत देखिए! आज पंजाब अपने सभी प्राकृतिक संसाधन यानी मिट्टी, पानी, पशु–परिंदे सब गंवा चुका है! अगर पंजाब में तालाब होते तो बीते वर्ष पंजाब में आई भीषण बाढ़ की तबाही से बचा जा सकता था लेकिन नहीं, तालाबों को अतिक्रमित कर सबको मैरिज पैलेस चाहिएं, नए–नए मॉल चाहिएं। विकास का मतलब मात्र प्लास्टिक, लोहा लंगड़ या निरर्थक चीजों से घर भरना नहीं, बल्कि विकास का व्यापक और विराट अर्थ प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों को निरंतर समृद्ध करते रहना है। विकास वह सतत बहने वाली प्रक्रिया है, जो समाज के हर स्तर को पहले से अधिक स्वावलम्बी, सहज, सरल और तनाव रहित बनाए। समाज और देश का स्वावलम्बन तब तक संभव नहीं जब तक भीतर–बाहर के पंचभूत समृद्ध नहीं होते।



वाल्मीकि तुलसी भए, तुलसी राधेश्याम

भारतीय रामकाव्य परम्परा एक अविरल प्रवाह है। उसका आदि स्रोत महर्षि वाल्मीकि हैं, जिन्होंने संस्कृत में राम के नर से नारायण बनने की गाथा कही। मध्यकाल में गोस्वामी तुलसीदास ने उसी कथा को अवधी की चौपाई–दोहा में ढालकर गाँव–गाँव के कंठ में बसा दिया। और आधुनिक काल में, जब खड़ी बोली अपने पैरों पर खड़ी होने का संघर्ष कर रही थी, पारसी रंगमंच बाजारू प्रेमाख्यानों से लोक–रुचि को विकृत कर रहा था, तब बरेली के एक युवा कथावाचक ने उसी रामकथा को खड़ी बोली के गेय पद्य में बाँधकर तीसरी बार जन–जन तक पहुँचा दिया। इसीलिए लोक ने सहज ही कहा –

वाल्मीकि तुलसी भए, तुलसी राधेश्याम।

यह केवल प्रशंसा का अतिरेक नहीं, एक साहित्यिक सत्य का स्वीकार है। 25 नवंबर 1890 को जन्मे पंडित राधेश्याम कथावाचक उसी परम्परा के तीसरे महत्वपूर्ण सोपान हैं।

बरेली के बिहारीपुर से राष्ट्र–मंच तकरू राधेश्याम जी का जन्म संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के बरेली शहर के बिहारीपुर मोहल्ले में पंडित बांकेलाल के घर हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण वे कथा–वाचन की ओर उन्मुख हुए। केवल 17–18 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने जिस प्रतिभा का परिचय दिया, उसने सभी को चकित कर दिया।

उनके जीवन की दो समानांतर धाराएँ थीं – कथावाचक के रूप में रामकथा का गायन और नाटककार के रूप में पारसी कंपनियों के लिए लेखन। दोनों में वे सिद्धहस्त हुए। 45 वर्षों तक वे कथावाचन और नाट्य–लेखन–मंचन में भारत के सिरमौर बने रहे और 26 अगस्त 1963 को 73 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ।

राधेश्याम रामायण रू खड़ी बोली की तुलसी–रामायणरू राधेश्याम जी की अमर कृति है – राधेश्याम रामायण। लोक–नाट्य–शैली के आधार पर उन्होंने इसे खड़ी बोली में 25 खण्डों में पद्यबद्ध किया।

यह ग्रंथ क्या था? न तो संस्कृत का क्लिष्ट पांडित्य, न अवधी का भक्तिकालीन अनुशासन। यह था – सामान्य हिंदुस्तानी आदमी की भाषा में, लय, तुक और गायन के साथ कही गई रामकथा। कथावाचकों ने कथा वाचन के लिए और रामलीला मंडलियों ने अभिनय के लिए इसे अपनाया। इसके कई अंशों के ग्रामोफोन रिकॉर्ड बने और घर–घर पहुँचे।

इसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगता है कि कहा जाता है कि उनके जीवनकाल में ही हिंदी–उर्दू में इसकी कुल मिलाकर पौने दो करोड़ से अधिक प्रतियाँ छपकर बिक चुकी थीं। यह संख्या प्रकाशकों का अनुमानित दावा है, पर यह इस बात का प्रमाण है कि राधेश्याम रामायण उनके जीवनकाल में ही सवा करोड़ से अधिक परिवारों तक पहुँच चुकी थी।

इस कृति का भाषिक महत्व भी कम नहीं है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स में हिंदी की सहायक प्रोफेसर पामेला लोथस्पाइच अपने शोध श्द राधेश्याम रामायण एण्ड संस्कृताइजेशन ऑफ खड़ी बोलीश में लिखती हैं कि 1939 से 1959 के बीच इसके संस्करणों में भाषा को उर्दू–मिश्रित हिंदुस्तानी से शुद्ध हिंदी की ओर ले जाने का स्पष्ट प्रयास दिखता है। जैसे अशोक वाटिका खंड में – ष्इत्तिफाकि़या नज़र से गुज़रा एक मुक़ामष बाद के संस्करणों में ष्अकस्मात देखा तभी एक मनोहर धामष हो गया। यह खड़ी बोली के परिष्कार का भी जीवंत दस्तावेज है।

राधेश्याम जी ने कथावाचन की एक नई शैली विकसित की जिसे श्राधेश्याम छंदश या श्तर्ज़ राधेश्यामश कहा गया। आज भी उत्तर भारत में जब कोई रामलीला होती है तो सूत्रधार जिस लय में – ष्सिया राम चंद्र की जयष से लेकर ष्मंदिर में झूमत आएष तक गाता है, वह इसी तर्ज़ की देन है।

पारसी रंगमंच का परिष्काररू सन् 1914 में वे प्रसिद्ध श्न्यू अल्फ्रेड कंपनीश से जुड़े और 1914–15 में अपना प्रसिद्ध नाटक श्वीर अभिमन्युश लिखा। इस नाटक की ख्याति से व्यावसायिक कंपनियों का ध्यान सुरुचिपूर्ण पौराणिक नाटकों की ओर गया।

उस समय पारसी थियेटर अंग्रेजी और फारसी प्रेमाख्यानों पर आधारित कुरुचिपूर्ण, अश्लील हास्य और बाजारू प्रेम से भरे नाटक खेलकर धन कमाता था और इसका लोकरुचि पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।

राधेश्याम जी और नारायण प्रसाद श्बेताबश जैसे लेखकों को ही यह श्रेय है कि उन्होंने ऐसी कंपनियों के लिए पौराणिक आख्यानों के आधार पर सुरुचिपूर्ण, आदर्शवादी हिंदी नाटकों की रचना की। उन्होंने श्श्रीकृष्णावतारश, श्रुक्मिणी मंगलश, श्ईश्वर भक्तिश, श्द्रौपदी स्वयंवरश, श्परिवर्तनश, श्उषा अनिरुद्धश आदि लगभग एक दर्जन नाटक लिखे, जिनमें श्उषा अनिरुद्धश और श्वीर अभिमन्युश को विशेष सफलता मिली।

ये नाटक पेशावर, लाहौर, अमृतसर से लेकर दिल्ली, जोधपुर, बंबई, मद्रास और ढाका तक पूरे हिंदुस्तान में छा गए। उनके श्परमभक्त प्रहलादश नाटक में उन्होंने बड़े कौशल से ब्रिटिश राज पर चोट की। पिता हिरण्यकश्यप के आदेश का उल्लंघन करते प्रहलाद के माध्यम से उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का सफल संदेश दिया और हिरण्यकश्यप के दमन व अत्याचार की तुलना ब्रिटिश शासकों से की। वे इतने सधे हुए नाटककार थे कि उनके नाटकों पर प्रतिबंध लगाने का कोई आधार ब्रिटिश राज में अंग्रेजों को भी नहीं मिला।

अपने जीवनकाल में उन्होंने स्वयं की 57 पुस्तकें लिखीं तथा 175 से अधिक पुस्तकों का संपादन–प्रकाशन कर श्राधेश्याम पुस्तकालयश को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अपनी आत्मकथा श्मेरा नाटक कालश (1957) भी वे लिख गए।

राष्ट्र–मान्य व्यक्तित्वरू राधेश्याम जी केवल जन–कवि नहीं, राष्ट्र–मान्य व्यक्ति थे।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु धन जुटाने जब महामना मदन मोहन मालवीय बरेली पधारे, तो राधेश्याम जी ने अपनी पूरे वर्ष की कमाई उन्हें दान दे दी। मालवीय जी उनके गुरु तुल्य थे।

रामकथा वाचन की शैली पर मुग्ध होकर पंडित मोतीलाल नेहरू ने उन्हें इलाहाबाद अपने आनंद भवन में बुलाकर चालीस दिनों तक कथा सुनी। 1922 के लाहौर विश्व धर्म सम्मेलन का शुभारंभ उन्हीं के लिखे और गाए हुए मंगलाचरण से हुआ था।

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित कर उनसे पंद्रह दिनों तक रामकथा का आनंद लिया। पृथ्वीराज कपूर उनके अभिन्न मित्र थे और घनश्यामदास बिड़ला उनके परम प्रशंसक थे। उन्होंने श्महारानी लक्ष्मीबाईश और श्कृष्ण–सुदामाश जैसी फिल्मों के लिए गीत भी लिखे।

तुलसी से राधेश्याम तक – परम्परा का अर्थरू

वाल्मीकि ने राम को महाकाव्य का नायक बनाया, तुलसी ने उन्हें घर–घर के आराध्य बनाया। राधेश्याम जी ने राम को श्मंच का नायकश बनाया। तुलसी की रामचरितमानस पाठ्य और श्रव्य है, राधेश्याम रामायण दृश्य और गेय है। तुलसी अवधी में भक्ति का सृजन करते हैं, राधेश्याम खड़ी बोली में अभिनय का।

इसीलिए वे साहित्यिक दृष्टि से भले ही तुलसी के समकक्ष न ठहराए जाएँ – स्वयं समीक्षकों ने लिखा है कि श्साहित्यिक दृष्टि से भले ही ये उच्चस्तरीय न हों किन्तु जनप्रिय रचनाओं द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार में इनका महत्वपूर्ण योगदान हैश – परन्तु लोक–प्रभाव की दृष्टि से वे तुलसी की ही अगली कड़ी हैं।

तुलसी ने मुगल काल में निराश हिंदू जनमानस को राम के माध्यम से मर्यादा का संबल दिया, राधेश्याम ने ब्रिटिश काल में पराधीन भारत को रामलीला और पौराणिक नाटकों के माध्यम से सांस्कृतिक आत्मगौरव और अप्रत्यक्ष राष्ट्रवाद का स्वर दिया।

वर्तमान में प्रासंगिकतारूआज जब रामकथा फिर से केंद्र में है, तब राधेश्याम जी का स्मरण और भी प्रासंगिक है। उनकी जयंती केवल एक साहित्यकार का जन्मदिन नहीं है। यह इस बात का स्मरण है कि साहित्य को महलों से निकालकर चौपाल तक कैसे ले जाया जाता है।

बरेली के राजकीय इंटर कॉलेज में स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत निर्मित ऑडिटोरियम का नाम आज उनके नाम पर रखा गया है और उनके बिहारीपुर स्थित आवास को संग्रहालय बनाने की घोषणा हो चुकी है। पर उनका वास्तविक स्मारक तो उत्तर प्रदेश के किसी भी गाँव में होने वाली वह रामलीला है जहाँ आज भी ढोलक की थाप पर कोई कलाकार गा उठता है –

ष्बाँधा है विधि ने विपति के जाल में...ष

और श्रोताओं की आँखें भर आती हैं। वह तर्ज, वह लय, वही राधेश्याम हैं।

वाल्मीकि ने देखा, तुलसी ने गाया, राधेश्याम ने नचाया – राम को जन–जन के हृदय–मंच पर। इसीलिए यह उक्ति आज भी उतनी ही सत्य है जितनी सौ वर्ष पूर्व थी – वाल्मीकि तुलसी भए, तुलसी राधेश्याम।

संतुलित विकास की सोच से ही बच सकती है दुनिया

उमेश चतुर्वेदी

देश अभी सूखे के दुष्प्रभाव से निबटने की कोशिश कर ही रहा था कि महज एक हफ्ते के भीतर बंगाल की खाड़ी से उठे दो–दो तूफानों ने इसके तटीय इलाकों में कहर बरपा गया। तकनीकी विकास की वजह से तूफानों की पूर्व सूचना के चलते सरकारों ने एहतियाती उपाय कर लिए, इस वजह से बहुत ज्यादा जानी नुकसान नहीं हुआ, लेकिन तटीय इलाकों के बुनियादी ढांचे, बिजली व्यवस्था आदि को भारी पैमाने पर नुकसान पहुंचाने में सफल रहा। अर्नब जहां 28–29 अक्टूबर को आया तो दो नवंबर को मुरासू कहर बनकर उभरा। इतिहास में कम ही मौके ऐसे आए होंगे, जब सिर्फ एक हफ्ते के भीतर दो–दो तूफान आए। इन दोनो तूफानों ने ना सिर्फ माली नुकसान पहुंचाया, बल्कि मौसम चक्र को भी बदलकर रख दिया। दोनों के असर से उत्तर भारत तक के मौसम में बदलाव दिखने लगा है। करीब डेढ़ दशक से उत्तर भारत में देर से दस्तक देने वाला ठंड का मौसम कुछ पहले ही आ गया है। विगत कुछ दशकों से भारत ही नहीं दुनिया के मौसम चक्र में बदलाव दिख रहा है। इसकी वजह से वातावरण का तापमान बढ़ रहा है, बारिश का चक्र या तो कमजोर पड़ रहा है या फिर अचानक ही किसी इलाके में तीव्र हो जा रहा है। इसके चलते जहां वनस्पतियों की जहां कुछ प्रजातियां नष्ट हो रही हैं, वहीं जंतु जगत के कार्यकलाप, आदत और अस्तित्व में परिवर्तन नजर आने लगे हैं। इसका असल फसल चक्र और उनकी पैदावार पर भी पड़ रहा है। अव्वल तो दुनिया को इन बदलावों से चिंतित होना चाहिए, विश्व परेशान भी दिखता है, लेकिन इस बदलाव को थामने की वैश्विक स्तर पर जैसी संजीदा कोशिश होनी चाहिए, नहीं हो रही है। मोटे तौर पर इस बदलाव के पीछे मनुष्य का लालच और समृद्धि हासिल करने की उसकी चाहत काम कर रही है। उन्नीसवीं सदी की औद्योगिक क्रांति के पहले तक पूरी दुनिया में संतुलित उपभोग का सिद्धांत काम करता था। औद्योगीकरण के बढ़ते कदम के साथ इस सोच में कमी आई। लेकिन उदारीकरण के तेज बढ़ते कदमों की वजह से दुनिया में उपभोगवाद को बढ़ावा। जैसे–जैसे उपभोग की संस्कृति बढ़ती गई, उत्पादन की मांग बढ़ती गई। उत्पादन के चलते प्रकृति का दोहन बढ़ा, ऊर्जा की मांग बढ़ी। इस पूरी प्रक्रिया में प्रकृति और सभ्यता के बीच संतुलन गड़बड़ाना शुरू हुआ। जिसका असर जलवायु परिवर्तन के रूप में दिख रहा है। महात्मा गांधी बहुत पहले इस व्यवस्था को लेकर दुनिया को चेता चुके थे। उपभोगवाद को नियंत्रित रखने की कल्पना उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका हिंद स्वराज में की है। 1909 में लिखी इस पुस्तिका में गांधी ने लिखा है, "हम देखते हैं कि मन एक बेचौन पक्षी है; जितना अधिक इसे मिलता है, उतना ही यह चाहता है और असंतुष्ट रहता है। हम जितना अधिक अपने जुनून में लिप्त होते हैं, वे उतने ही बेलगाम होते जाते हैं। इसलिए, हमारे पूर्वजों ने हमारे भोग–विलास की एक सीमा तय की।

उन्होंने देखा कि खुशी काफी हद तक एक मानसिक स्थिति थी। एक आदमी जरूरी नहीं कि इसलिए खुश हो क्योंकि वह अमीर या दुखी है। आखिरकार, वह गरीब है। अमीरों को अक्सर दुखी और गरीबों को खुश देखा जाता है। लाखों लोग हमेशा गरीब रहेंगे। यह सब देखते हुए, हमारे पूर्वजों ने हमें विलासिता और सुख से दूर रखा।" आज दुनिया ने शहरीकरण और औद्योगीकरण को विकास का पैमाना मान लिया है। दोनों ने ही हमारे जीवन में उपभोगवाद को बढ़ावा दिया है। इसकी वजह से हमारी जलवायु में कई तरह के बदलाव आ रहे हैं। इसका सबसे स्पष्ट संकेत यह है कि दुनिया गर्म हो रही है। वैज्ञानिकों को यह बात उपग्रहों, मौसम संबंधी गुब्बारों, थर्मामीटरों, मौसम केंद्रों और अन्य स्रोतों से जुटाए गए सबूतों से पता चली है। 1880 के बाद से, विश्व के औसत तापमान में लगभग एक डिग्री सेल्सियस यानी करीब 1.7 डिग्री फ़ारेनहाइट की वृद्धि हुई है।

अगर शहरीकरण और औद्योगीकरण केंद्रित उपभोगवाद यूं ही जारी रहा तो अनुमान है कि 2050 तक वैश्विक तापमान में लगभग 1.5 डिग्री सेल्सियस यानी करीब 2.7 डिग्री फ़ारेनहाइट और साल 2100 तक 2.4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है। नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार, 1960 के दशक से वैश्विक औसत वार्षिक तापमान में लगातार वृद्धि हुई है। इसके आंकड़ों के अनुसार, 20वीं सदी के बाद से सबसे गर्म रहे 20 वर्षों में से 19 वर्ष सिर्फ 2001 के बाद के हैं। आशंका है कि भविष्य में आने वाला सबसे ठंडा वर्ष भी, 20वीं सदी के सबसे गर्म वर्ष की तुलना में अधिक गर्म होगा। विस्कॉन्सिन में तापमान और वर्षा में आए बदलावों का पता लगाने के लिए, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन–मैडिसन के वैज्ञानिकों ने श्नेशनल क्लाइमेटिक डेटा सेंटरश द्वारा पूरे राज्य के नेटवर्क से जुटाए गए तापमान रिकॉर्ड का विश्लेषण किया है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि 1950 के दशक के बाद से विस्कॉन्सिन का तापमान 2 डिग्री फ़ारेनहाइट बढ़ गया है, साथ ही यहाँ बारिश में 4.5 इंच यानी करीब 14 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। इसमें सबसे ज़्यादा तापमान सर्दियों में बढ़ा है, जबकि वर्षा में सबसे अधिक वृद्धि गर्मियों के दौरान हुई है।



– डॉ. अवनीश यादव
प्रांतीय शिक्षा सेवा संवर्ग,
उत्तर प्रदेश

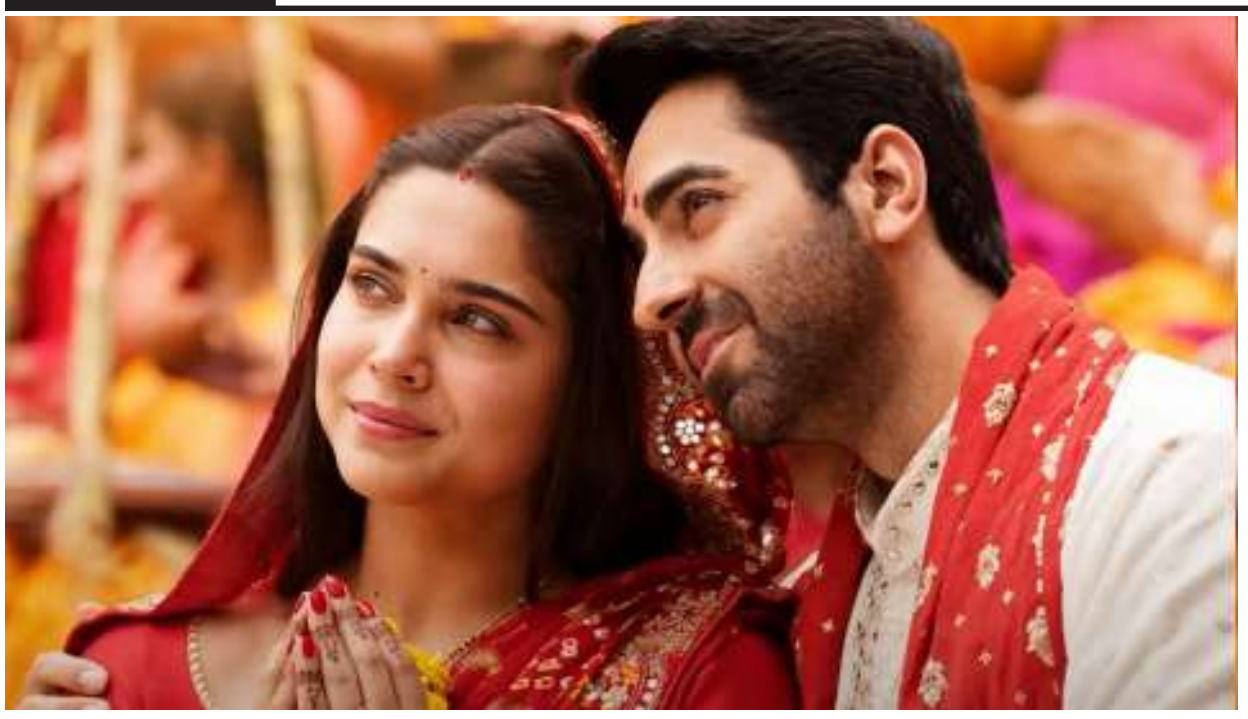

रिलीज से पहले `ये प्रेम मोल लिया' को मिला विदेशी दर्शकों का प्यार, नॉर्थ अमेरिका में बिके 1,300 से ज्यादा टिकट

सूरज आर. बड़जात्या की फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' सिनेमाघरों में रिलीज होने से पहले ही सुर्खियां बटोर रही है। आयुष्मान खुराना और शरवरी की जोड़ी वाली इस फिल्म को लेकर दर्शकों में उत्सुकता नजर आ रही है। भारत में 27 नवंबर को रिलीज होने वाली इस फिल्म का इंतजार विदेशों में रह रहे भारतीय दर्शक भी कर रहे हैं। इसी को देखते हुए फिल्म की नॉर्थ अमेरिका में एक दिन पहले यानी 26 नवंबर को विशेष स्क्रीनिंग रखी गई है, जो थैंक्सगिविंग वीकेंड के मौके पर दर्शकों को मनोरंजन का खास अवसर देगी। फिल्म की एडवांस बुकिंग को लेकर शुरुआती आंकड़े भी उत्साह बढ़ाने वाले हैं। अमेरिका के कुछ चुनिंदा सिनेमाघरों में टिकटों की बिक्री शुरू हो चुकी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, शुरुआती दो दिनों में ही 1,300 से अधिक टिकट बिक गए हैं और इससे 17,000 डॉलर से ज्यादा का कारोबार हुआ है। दिलचस्प बात यह है कि फिल्म की रिलीज में अभी पांच दिन बाकी हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि जैसे–जैसे अन्य सिनेमाघरों में शो और टिकट बुकिंग की जानकारी सामने आएगी, यह आंकड़ा और आगे बढ़ सकता है। फिल्म से जुड़े एक सूत्र ने बताया कि थैंक्सगिविंग के दौरान नॉर्थ अमेरिका में परिवार एक साथ समय बिताना पसंद करते हैं। राजश्री की फिल्मों की खासियत भी पारिवारिक कहानियां और रिश्तों की भावनाओं को पर्दे पर खूबसूरती से पेश करना रही है। शुरुआती टिकट बिक्री से पता चलता है कि विदेशों में रहने वाले भारतीय दर्शकों के बीच सूरज बड़जात्या की इस फिल्म को लेकर अच्छा उत्साह है। फिलहाल कुछ ही सिनेमाघरों में बुकिंग खुली है और आने वाले दिनों में इसके विस्तार की उम्मीद है। ये प्रेम मोल लिया' को दुनियाभर में रिलीज किया जाएगा, जबकि यशराज फिल्म्स इसके वितरण का जिम्मा संभाल रही है। फिल्म के निर्माता और स्टूडियो ने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में टिकटों की कीमतों को उचित रखने पर जोर दिया है, ताकि परिवार के सभी सदस्य आसानी से सिनेमाघरों में फिल्म देख सकें। भारत में फिल्म की एडवांस टिकट बुकिंग 25 नवंबर से शुरू होने वाली है। हिमेश रेशमिया के संगीत से सजी इस फिल्म में अनुपम खेर, सुप्रिया पाठक, सीमा पाहवा और सौम्या टंडन भी अहम किरदारों में नजर आएंगे। फिल्म के जरिए एक बार फिर राजश्री प्रोडक्शंस अपनी पारिवारिक मनोरंजन की पहचान को बड़े पर्दे पर लेकर आ रहा है। राजश्री प्रोडक्शंस और महावीर जैन फिल्म्स के सहयोग से बनी 'ये प्रेम मोल लिया' का निर्देशन सूरज आर. बड़जात्या ने किया है। फिल्म 27 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

> फिल्म की एडवांस बुकिंग को लेकर शुरुआती आंकड़े भी उत्साह बढ़ाने वाले हैं। अमेरिका के कुछ चुनिंदा सिनेमाघरों में टिकटों की बिक्री शुरू हो चुकी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, शुरुआती दो दिनों में ही १,३०० से अधिक टिकट बिक गए हैं और इससे १७,००० डॉलर से ज्यादा का कारोबार हुआ है।



महिला आरक्षण पर कंगना रनौत ने उठाए सवाल

भाजपा सांसद कंगना रनौत ने सोमवार को कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने महिला आरक्षण विधेयक पर राहुल गांधी के रुख को लेकर उन पर महिला–विरोधी होने का आरोप लगाया और कहा कि राहुल गांधी नहीं चाहते कि संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पुरुषों के बराबर हो। आगरा में न्यूज एजेंसी से बात करते हुए कंगना रनौत ने कहा, अगर राहुल गांधी महिला–विरोधी नहीं होते, तो वे इस विधेयक को पेश होने देते। राहुल गांधी नहीं चाहते कि संसद में महिलाओं की संख्या पुरुषों के बराबर हो। उनके ये बयान महिला आरक्षण और प्रस्तावित परिसीमन प्रक्रिया पर चल रही राजनीतिक बहस के बीच आए हैं। लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण को लागू करने का मामला जनगणना और उसके बाद होने वाली परिसीमन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। इस बीच, कांग्रेस नेता राशिद अल्वी ने रविवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) परिसीमन विधेयक को पारित कराने के लिए किसी भी तरह (साम–दाम–दंड–भेद अपनाकर) जरूरी दो–तिहाई बहुमत हासिल कर लेगी। उन्होंने दावा किया कि सत्ताधारी पार्टी विपक्षी दलों के सांसदों को अपने पाले में करने की कोशिश कर रही है। न्यूज एजेंसी से बात करते हुए, अल्वी ने दावा किया कि बीजेपी तृणमूल कांग्रेस, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके), शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के शरद पवार गुट के सांसदों का समर्थन जुटाने की कोशिश कर रही है। न्यूज एजेंसी से बात करते हुए, अल्वी ने दावा किया कि बीजेपी तृणमूल कांग्रेस, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके), शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के शरद पवार गुट के सांसदों का समर्थन जुटाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि बीजेपी किसी भी तरह से अपना काम पूरा कर लेगी। उन्होंने ममता बनर्जी की पार्टी से 20 सांसदों को तोड़ लिया है। अगर वे क्डज्ञ को अपने पाले में करने में कामयाब हो जाते हैं, तो उनके पास 22 सांसद और आ जाएंगे। वे पहले ही शिवसेना से 7–8 सांसदों को तोड़ चुके हैं। शरद पवार की पार्टी से भी उन्हें समर्थन मिलने की संभावना है, क्योंकि उनकी बेटी ने इस बारे में पहले ही बयान दे दिया है। इससे वे दो–तिहाई बहुमत के आंकड़े तक पहुंच जाएंगे। प्रस्तावित परिसीमन विधेयक का उद्देश्य लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाकर 850 करना है। बीजेपी के नेतृत्व वाला सत्ताधारी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) तर्क देता है कि नई जनगणना के आंकड़ों को शामिल करने और लोकसभा में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण लागू करने के लिए परिसीमन एक संवैधानिक आवश्यकता है।

क्या हम साफ-सुथरी फिल्में नहीं बना सकते? आज की फिल्में सिर्फ एडल्ट्स के लिए... बढ़ती अश्लीलता को लेकर भड़के हनुमान अंश के निर्देशक



उन्होंने कहा कि ऐसे साफ–सुथरे और पारिवारिक कंटेंट की जरूरत है, जिसका आनंद हर उम्र के दर्शक एक साथ बैठकर ले सकें। अपनी फिल्म हनुमान अंशश को मिले रिस्पॉन्स के बारे में बात करते हुए, विशाल ने बताया कि इसकी सफलता का मुख्य कारण वे परिवार रहे, जो बच्चों और दादा–दादी,नाना–नानी के साथ सिनेमाघर पहुंचे। सिनेमाघरों में दिखाए जा रहे कंटेंट पर सवाल उठाते हुए विशाल ने कहा, आजकल लगभग सभी फिल्में सिर्फ वयस्कों (एडल्ट्स) के लिए होती हैं। इनमें बहुत ज्यादा हिंसा और अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि फिल्म की सफलता का कारण टिकट की ऊंची कीमतें या अन्य कोई कारक नहीं, बल्कि परिवारों का एक साथ बैठकर फिल्म देखना रहा। विशाल ने एक किस्सा साझा करते हुए बताया, दिल्ली में कैंसर से जूझ रहे बच्चों के लिए एक स्क्रीनिंग रखी गई थी। फिल्म देखने के बाद, उन बच्चों ने एक पत्र लिखा जिसमें कहा कि वे ढाई घंटे तक अपना दर्द भूल गए थे। मुझे लगता है कि यह बहुत भावुक कर देने वाली बात है। कई दादा–दादी,नाना–नानी ने मुझे बताया कि उनके पोते–पोतियों ने उनसे कहा, दादाजी, आप तो फिल्म में आए हैं। ये बातें सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगता है। उन्होंने आगे कहा, आजकल की सभी फिल्में एडल्ट–ओरिएंटेड होती हैं। फिल्मों में बहुत ज्यादा हिंसा और अभद्र भाषा का इस्तेमाल होता है। क्या हम साफ–सुथरी फिल्में नहीं बना सकते ? क्या हम परिवारों के लिए फिल्में नहीं बना सकते ? हमारी फिल्म के टिकट काफी महंगे थे, लेकिन फिल्म की सफलता का कारण यह नहीं था। हमारी फिल्म परिवारों की वजह से सफल रही। कई बार लोग अपने बच्चों के साथ फिल्म देखने जाते हैं, और फिर दूसरी बार अपने दादाजी को भी साथ ले आते हैं। अगर मैं जाऊं, तो मैं अपने बच्चे को ले जाऊंगाय मेरा बच्चा अपने दादाजी को ले जाएगा, और दादाजी अपने भाई और पत्नी को साथ ले आएंगे। इसी तरह हमारी फिल्म सफल रही। और यह संभावना हर फिल्म के साथ हो सकती है।ष्हनुमान अंशश 27 नवंबर, 2026 को OTT प्लेटफॉर्म सोनीलिव पर प्रीमियर होगा।



मां के प्यार और समर्पण की कहानी सुनाएगा 'आया', सोनू निगम और सावनी रविंद्र ने दी आवाज

मां और बच्चे का रिश्ता दुनिया के सबसे खूबसूरत रिश्तों में से एक है। इसी रिश्ते की भावनाओं को अब संगीत के जरिए पर्दे पर उतारने की कोशिश की गई है। फिल्म गणेश डस्ट टू स्टारडस्ट का नया गाना श्आयाश रिलीज हो गया है। इसे सोनू निगम और सावनी रविंद्र ने अपनी आवाज दी है। गीत में मां के निस्वार्थ प्यार, त्याग, हिम्मत और बच्चों के लिए उनके समर्पण को दर्शाया गया है। आया की धुन सुकून देने वाली है, वहीं इसके बोल मां की ममता और उसके अनकहे एहसासों को सामने लाते हैं। सोनू निगम की सुरीली गायकी के साथ सावनी रविंद्र की भावपूर्ण आवाज गीत को एक अलग एहसास देती है। इसके बोल समीर लालजी पांडे ने लिखे हैं और संगीत की जिम्मेदारी जुनैद कुमार ने संभाली है। यह गीत उन छोटी–बड़ी कुर्बानियों को याद दिलाता है, जो एक मां अपने बच्चों के लिए करती है। गाने के बारे में सोनू निगम ने कहा, "आया का हिस्सा बनना मेरे लिए एक बहुत अच्छा अनुभव रहा। मुझे खास तौर पर यह पसंद आया कि इसकी धुन और बोल किस तरह मिलकर एक खूबसूरत भावना पैदा करते हैं। गणेश आचार्य और जुनैद कुमार के साथ काम करना शानदार अनुभव था। उम्मीद है कि दर्शकों को भी यह गाना उतना ही पसंद आएगा, जितना इसे बनाते समय हमें अच्छा लगा।" सावनी रविंद्र ने सोनू निगम के साथ गाने को अपने लिए यादगार अनुभव बताया। उन्होंने कहा, "सोनू निगम के साथ गाना गाना मेरे लिए बेहद खास है और आया हमेशा मेरे लिए एक यादगार अनुभव रहेगा। इस गाने की धुन बहुत खूबसूरत है और मुझे अपनी आवाज के जरिए इसकी भावनाओं को जीवंत करना बहुत अच्छा लगा। गणेश आचार्य के लिखे बोल और जुनैद कुमार का संगीत इस पूरे अनुभव को और भी खास बनाते हैं। मैं बेसब्री से इंतजार कर रही हूं कि दर्शक इस गाने को सुनें और इससे जुड़ाव महसूस करें।" गणेश डस्ट टू स्टारडस्ट को गणेश आचार्य ने लिखा और निर्देशित किया है। फिल्म की निर्माता सौंदर्या आचार्य हैं, जिन्होंने इसे वी2एस प्रोडक्शन एंड एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनाया है। फिल्म का संगीत जी म्यूजिक कंपनी के पास है। यह फिल्म 11 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

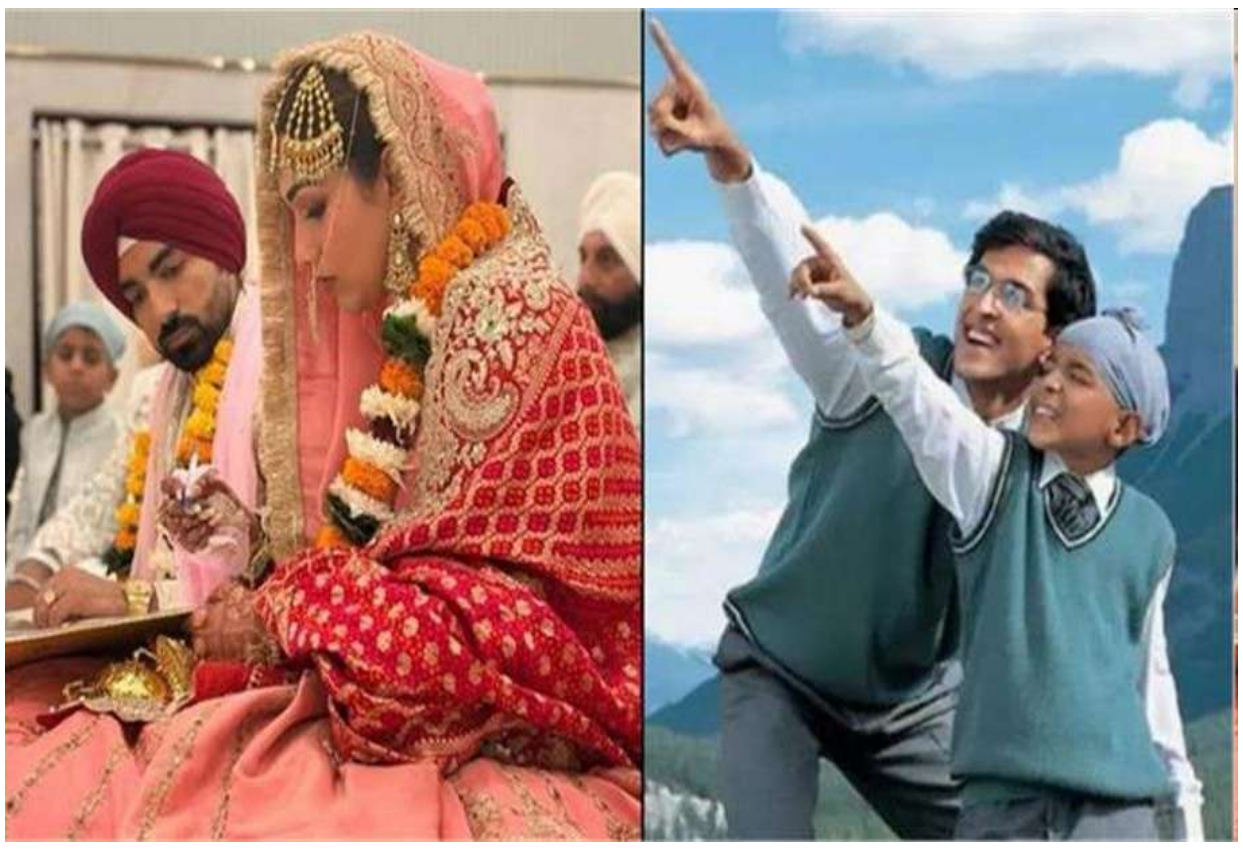

कोई मिल गया फेम अनुज पंडित बने दूल्हा, हिन्दू और सिख दोनों रीति-रिवाजों से रचाई शादी

2003 की बॉलीवुड फिल्म कोई... मिल गया में बिट्टू सरदार का किरदार निभाने के लिए मशहूर अभिनेता अनुज पंडित शर्मा ने डॉ. प्रभजोत चावला के साथ एक निजी समारोह में शादी कर ली है। अभिनेता ने सोशल मीडिया पर शादी के जश्न की कुछ झलकियां साझा कीं, जिससे उनके प्रशंसकों को उनके लोकप्रिय ऑन–स्क्रीन किरदार की पुरानी यादें ताजा हो गईं। इस जोड़े ने हिंदू और सिख दोनों परंपराओं के अनुसार शादी की रस्में निभाईं। शादी की रस्मों में पवित्र अग्नि के चारों ओर फेरे लेना और उसके बाद एक गुरुद्वारे में आधिकारिक विवाह दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करना शामिल था। इस मौके पर अनुज ने ऑफ–व्हाइट रंग की कढ़ाई वाली शेरवानी पहनी थी, जबकि प्रभजोत पारंपरिक लाल दुल्हन के लहंगे में बेहद खूबसूरत लग रही थीं। शादी के जश्न की तस्वीरों ने प्रशंसकों को इस जोड़े के खास दिन की एक झलक दिखाई। सोशल मीडिया प्रोफाइल के अनुसार, डॉ. प्रभजोत चावला एक हेल्थ और वेलनेस प्लेटफॉर्म की संस्थापक हैं और फिटनेस के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। अनुज पंडित शर्मा, जो अब अनुज अनिल शर्मा के नाम से भी जाने जाते हैं, ऋतिक रोशन अभिनीत फिल्म कोई... मिल गया (2003) में बिट्टू सरदार के किरदार से मशहूर हुए थे। उसी साल, वे फिल्म डरना मना है में भी नजर आए थे। इसके बाद उन्होंने से सलाम इंडिया (2007) और टोटल सियापा (2014) जैसी फिल्मों में काम किया, जिनमें उन्होंने यामी गौतम के किरदार के भाई मानव की भूमिका निभाई थी। टेलीविजन पर, अनुज को परवरिश सीजन 2 (2015–2016) में जोगिंदर जोगी खुराना का किरदार निभाने से पहचान मिली। उन्होंने कॉमेडी सीरीज आदत से मजबूर (2017–2018) में सनी का किरदार भी निभाया था। बाद में उन्होंने डिजिटल एंटरटेनमेंट की दुनिया में भी काम किया। 2021 में, उन्होंने डिज्नी़ हॉटस्टार पर स्ट्रीम हुई शॉर्ट–फॉर्म कॉमेडी वेब सीरीज बामिनी एंड बॉयज में उत्पल का किरदार निभाया। अनुज फिलहाल अपने आने वाले प्रोजेक्टश्कॉमन आदमी से जुड़े हैं, जिसमें वह अभिनय करने के साथ–साथ लेखक के तौर पर भी काम कर रहे हैं। कुशल एस. राठौर के निर्देशन में बन रहे इस प्रोजेक्ट में ऋतुपर्णा सेनगुप्ता, सोनाली कुलकर्णी, बृजेंद्र काला और अलका अमीन जैसे कई कलाकार शामिल हैं। अभिनय और स्क्रिप्ट राइटिंग के अलावा, अनुज ने म्यूजिक वीडियो में भी काम किया है। वह जी म्यूजिक कंपनी द्वारा रिलीज किए गए गाने मेरी हीरिये में कनिका कपूर के साथ नजर आए, और इसके अलावा उन्होंने तेरे वास्ते गाने में भी काम किया है।



शादी के सीजन में पेस्टल रंग छोड़ दुल्हनें चुन रहीं रॉयल दुल्हन लंहगा

इस शादी के सीजन में पेस्टल रंगों की जगह गहरे और रॉयल रंगों का चलन तेजी से बढ़ रहा है। दुल्हनों की पसंद अब मरून, बरगंडी, एमराल्ड ग्रीन, नेवी ब्लू, शैंपेन गोल्ड और वाइन जैसे डीप शेड्स बन रहे हैं। ये शाही और मेटैलिक रंग दुल्हनों को शादी में बेहद ग्रेसफुल और रॉयल लुक देते हैं।

लंबे समय से शादियों में हर एक ब्राइड लाइट पिंक, पीच और लैवेंडर रंग को लहंगे में नजर आ रही थी। जैसा कि यह कलर्स सिर्फ फोटोज में अच्छे लगते हैं। हालांकि, अब ऐसा लगता है कि इस शादी के सीजन में ट्रेंड में कापी बदलाव देखने को मिल रहा है।

आजकल दुल्हनें हल्के रंगों को छोड़कर गहरे, चमकदार और रॉयल रंगों की तरफ बढ़ रही है। वैसे यह रंग महारानियों को काफी पसंद थे, अब यहीं रंग फैशन बन गए हैं।

ट्रेंड में हैं डीप और मेटैलिक शेड्स

इस साल आपकी शादी होने जा रही है, तो आप सबसे अलग दिखाना चाहते हैं, तो पेस्टल कलर्स को भूल जाइएं। इस बार रॉयल व गहरे रंग का ट्रेंड काफी देखने को मिल रहा है। ब्राइल लुक में जान डाल रहा है रॉयल कलर्स। दुल्हनों की पहली पसंद बन रहा है, गहरा हरा, गहरा नीला, वाइन, गोल्डन और शैंपेन जैसे रंग। इन कलर्स में आप एकदम रॉयल दिखेंगी।

मरुन और बरगंडी

यह एक ऐसा कलर है, जो कभी फैशन से बाहर नहीं जा सकता है। इस सीजन में मरुन और बरगंडी के रंग के लहंगे काफी पसंद किए जा रहे हैं। वैसे इन कलर्स में दुल्हन काफी ग्रेसफुल नजर आती है। ऐसे में आपको ज्यादा एक्सपेरिमेंट नहीं करना है और ट्रेंड में रहना है, तो मरुन आपके लिए सेफ और स्टाइलिश ऑप्शन हो सकता है।

शैंपेन गोल्ड और रोज गोल्ड

चंटक रंग आपको पसंद नहीं है, तो आप रॉयल दिखने के लिए शैंपेन गोल्ड सबसे बेहतरीन रह सकता है। पहले गोल्डन रंग केवल कढ़ाई के लिए इस्तेमाल होता था, लेकिन बाद में पूरा लहंगा ही गोल्डन शेड में बन रहा है। वैसे टिशू और शिमरी कपड़े में ये रंग काफी सॉफ्ट और महंगा लगता है, लेकिन रोज गोल्ड शेड उन दुल्हनों के लिए हैं, जो मॉर्डन और ट्रेडिशनल दोनों को मिक्स करती हैं।

एमराल्ड ग्रीन और बॉटल ग्रीन

विंटर की शादी के लिए ग्रीन रंग से अच्छा कोई रंग हो नहीं सकता है। आजकल एमराल्ड ग्रीन और बॉटल ग्रीन का लहंगा रात की शादी के लिए सबसे खूबसूरत लगता है। वहीं, वेलवेट कपड़े पर यह रंग और भी खिलता है। इस पर सुनहरी जरी का कम हो, तो लुक और भी खास बन जाता है। इस रंग के साथ कुंदन की ज्वेलरी सबसे बेहतरीन लगती है।

नेवी ब्लू और सैफायर ब्लू

ब्राइडल ट्रेडिशनल लाल रंग से हटकर कुछ हटकर कलर पहन रही हैं। इसके लिए नेवी ब्लू सबसे अच्छे ऑप्शन हो सकते हैं। ये रंग फोटो में काफी क्लासी लगते हैं। इन पर सिल्वर वर्क, मिरर वर्क और सीक्विन लहंगा में चार चांद लगा देते हैं। रात की शादी में लहंगा चमकता हुआ नजर आता है। इस रंग के साथ डायमंड और सिल्वर ज्वेलरी पहन सकते हैं। आप मेकअप को हल्का रखें, जिससे लहंगा और भी चमकें।

वाइन, रूबी और प्लम

गौरतलब है कि रेड कलर दुल्हनों को काफी पसंद होता है, लेकिन अब लाल का गहरा रुप ज्यादा चल रहा है। वाइन, रुबी और प्लम जैसे गहरे रंग लाल से भी ज्यादा शाही दिखते हैं। बस इन पर गोल्डन जरदोजी का वर्क हो, तो ब्राइड एकदम राजकुमारी नजर आती हैं। इस तरह के रंग रात की शादियों के लिए एकदम परफेक्ट है। इसके साथ गोल्ड ज्वेलरी सबसे ज्यादा जंचती है।

सर्दियां आते ही क्यों बढ़ जाती है भूख, बार-बार खाने का मन होने के पीछे छिपी हैं ये 3 वजहें



सर्दियों का मौसम शुरू होते ही कई लोगों को बार–बार भूख लगने लगती है। कभी गर्मागर्म पराठे और पकौड़े खाने का मन करता है, तो कभी मीठा, चॉकलेट और दूसरी चीजें खाने की क्रेविंग होने लगती है। कई बार खाना खाने के कुछ देर बाद ही दोबारा भूख महसूस होने लगती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि गर्मियों के मुकाबले सर्दियों में भूख ज्यादा क्यों लगती है? दरअसल, इसके पीछे सिर्फ खाने का शौक नहीं, बल्कि शरीर का तापमान, हार्मोन और दिनचर्या में होने वाले बदलाव भी जिम्मेदार हो सकते हैं। आइए जानते हैं सर्दियों में भूख बढ़ने की 3 बड़ी वजहें और इसका शरीर पर क्या असर पड़ता है।

शरीर को गर्म रखने के लिए चाहिए ज्यादा एनर्जी

सर्दियों में बाहर का तापमान कम हो जाता है। ऐसे में शरीर को अपना अंदरूनी तापमान सामान्य बनाए रखने के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ सकती है। इस प्रक्रिया में ऊर्जा खर्च होती है। ठंड के दौरान शरीर कंपकंपी और दूसरी प्रक्रियाओं के जरिए गर्मी पैदा करता है। इससे कुछ लोगों की ऊर्जा की जरूरत बढ़ सकती है और उन्हें ज्यादा भूख महसूस हो सकती है। हालांकि, हर व्यक्ति के शरीर पर ठंड का असर एक जैसा नहीं होता। यह आपकी शारीरिक गतिविधि, मौसम के तापमान और शरीर की स्थिति पर भी निर्भर करता है।

धूप कम मिलने से बदलती है खाने की क्रेविंग

सर्दियों में दिन छोटे हो जाते हैं और कई जगहों पर ध ाूप भी कम मिलती है। इसका असर हमारी नींद, मूड और खाने की आदतों पर पड़ सकता है। शरीर की जैविक घड़ी यानी बॉडी क्लॉक में बदलाव आने से भूख और नींद से जुड़े संकेत भी प्रभावित हो सकते हैं। इसके अलावा, कुछ लोगों को सर्दियों में मीठा, चॉकलेट, ब्रेड और कार्बोहाइड्रेट से भरपूर चीजें खाने की ज्यादा इच्छा होती है। कम धूप और मूड में बदलाव भी इस क्रेविंग की एक वजह हो सकते हैं। हालांकि, हर किसी को ऐसा अनुभव नहीं होता।

कम चलना–फिरना भी बन सकता है वजन बढ़ने की वजह

ठंड और कोहरे के कारण कई लोग सुबह की सैर, आउटडोर गेम्स और एक्सरसाइज से दूरी बना लेते हैं। इससे उनकी रोजाना की शारीरिक गतिविधि कम हो जाती है। वहीं दूसरी तरफ, सर्दियों में पराठे, पकौड़े, मिठाइयां और दूसरी ज्यादा कैलोरी वाली चीजें खाने का मन करता है। जब शरीर की जरूरत से ज्यादा कैलोरी भोजन के जरिए मिलने लगती है और शारीरिक गतिविधि कम हो जाती है, तो धीरे–धीरे वजन बढ़ सकता है। इसलिए सर्दियों में भी अपनी दिनचर्या में टहलना और हल्की–फुल्की एक्सरसाइज शामिल करना जरूरी है।

सर्दियों में बढ़ती भूख को कैसे करें कंट्रोल?

सर्दियों में भूख लगने पर खाना छोड़ना या जबरदस्ती खुद को भूखा रखना सही तरीका नहीं है। इसकी जगह अपनी डाइट में पौष्टिक और पेट भरने वाली चीजें शामिल करें।

प्रोटीन लें: दाल, पनीर, अंडे और दही जैसे खाद्य पदार्थ खाने से पेट लंबे समय तक भरा महसूस हो सकता है।

मौसमी फल–सब्जियां खाएं: गाजर, मूली, पालक, संतरा और अमरूद जैसे मौसमी खाद्य पदार्थ डाइट में शामिल करें।

पानी पीना न भूलें: ठंड में प्यास कम लग सकती है, लेकिन शरीर को पर्याप्त पानी की जरूरत बनी रहती है।

फाइबर वाली चीजें खाएं: ओट्स, साबुत अनाज, फल और सब्जियां पाचन को बेहतर रखने में मदद कर सकते हैं।

रोजाना एक्सरसाइज करें: मौसम चाहे ठंडा हो, रोजाना 20–30 मिनट टहलने या हल्की एक्सरसाइज की आदत बनाए रखें।

नोट: सर्दियों में ज्यादा भूख लगना कई लोगों के लिए सामान्य अनुभव हो सकता है। शरीर की ऊर्जा की जरूरत, धूप में कमी और दिनचर्या में बदलाव इसके पीछे कुछ संभावित कारण हैं। ऐसे में संतुलित डाइट, पर्याप्त नींद और नियमित शारीरिक गतिविधि के जरिए आप अपनी भूख और वजन दोनों को बेहतर तरीके से मैनेज कर सकते हैं।



सर्दियों में पानी की टंकी में कर लें ये जुगाड़, ठंडा नहीं होगा पानी!

सर्दियों का मौसम आते ही नहाने के लिए गर्म पानी की जरूरत महसूस होने लगती है। खासकर सुबह के समय छत पर रखी पानी की टंकी का पानी इतना ठंडा हो जाता है कि नहाने से पहले कई बार सोचना पड़ता है। जिन घरों में गीजर की सुविधा नहीं है, उनके लिए यह परेशानी और बढ़ जाती है। वहीं, रोजाना इमर्शन रॉड का इस्तेमाल करने से बिजली का बिल भी बढ़ सकता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कुछ आसान घरेलू उपायों से पानी की टंकी को ज्यादा ठंडा होने से बचाया जा सकता है? इसके लिए आपको महंगे उपकरण खरीदने की जरूरत नहीं है। आइए जानते हैं कुछ ऐसे आसान तरीके, जिनकी मदद से सर्दियों में टंकी के पानी का तापमान बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

टंकी के चारों तरफ लगाएं थर्माकोल

अगर आपके घर की पानी की टंकी छत या किसी खुली जगह पर रखी है, तो उसके चारों तरफ मोटी थर्माकोल शीट लगाई जा सकती है। थर्माकोल एक अच्छा इंसुलेटर होता है, जो गर्मी के नुकसान को धीमा करने में मदद करता है। इससे रात के समय ठंडी हवा का असर टंकी के पानी पर कम पड़ सकता है और पानी का तापमान लंबे समय तक बना रह सकता है।

बबल रैप का करें इस्तेमाल

घर में बबल रैप पड़ा है तो उसे फेंकने के बजाय पानी की टंकी को इंसुलेट करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इसमें मौजूद हवा की छोटी–छोटी परतें गर्मी के आदान–प्रदान को कम करने में मदद करती हैं। इसे टंकी के चारों तरफ अच्छी तरह लपेटा जा सकता है। हालांकि, इसे धूप और बारिश से बचाने के लिए ऊपर से सुरक्षित कवर लगाना बेहतर रहेगा।

टंकी को ठंडी हवा से बचाएं

छत पर खुले में रखी पानी की टंकी पर रात के समय ठंडी हवा और ओस का सीधा असर पड़ सकता है। इससे बचने के लिए टंकी के ऊपर शेड बनवाया जा सकता है। इसके लिए लकड़ी, तिरपाल या अन्य उपयुक्त सामग्री का इस्तेमाल कर सकते हैं। ध्यान रखें कि टंकी का ढक्कन हमेशा अच्छी तरह बंद रहे, ताकि उसमें धूल–मिट्टी या गंदगी न जाए।

टंकी को ऐसी जगह रखें जहां धूप आती हो

अगर टंकी को दूसरी जगह रखना संभव है, तो कोशिश करें कि उसे ऐसी जगह रखा जाए जहां दिनभर अच्छी धूप आती हो। धूप से टंकी और उसके पानी का तापमान कुछ बढ़ सकता है। हालांकि, इसका फायदा मौसम, धूप की अवधि और टंकी की बनावट पर निर्भर करता है।

रात में टंकी को करें इंसुलेट

दिनभर धूप में रहने के बाद रात के समय टंकी का पानी ठंडा होने लगता है। ऐसे में टंकी के चारों तरफ इंसुलेशन की परत लगाना फायदेमंद हो सकता है। इसके लिए वाटरप्रूफ इंसुलेशन कवर का इस्तेमाल करें। केवल कंबल या कपड़ा डालने के बजाय ऐसी सामग्री चुनें जो बारिश और नमी से खराब न हो।

टंकी के ढक्कन को रखें बंद

पानी की टंकी का ढक्कन हमेशा अच्छी तरह बंद रखना चाहिए। इससे धूल, पत्तियां, कीड़े और दूसरी गंदगी पानी में नहीं गिरती। साथ ही, टंकी को खुला छोड़ने से बचना चाहिए। सही ढक्कन और बाहरी इंसुलेशन मिलकर पानी के तापमान को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

नोट: इन उपायों से पानी को ठंडा होने से बचाने में मदद मिल सकती है, लेकिन बिना हीटिंग सिस्टम के पानी को लगातार गर्म रखने की गारंटी नहीं होती। अगर आपको नहाने के लिए गर्म पानी चाहिए, तो सुरक्षित गीजर या अन्य प्रमाणित वॉटर हीटिंग सिस्टम का इस्तेमाल करें।



ठंड के मौसम में सबसे ज्यादा हरी सब्जियों का सेवन किया जाता है। इस समय बाजारों में पालक, बथुआ और मेथी जैसी हरी–पत्तेदार सब्जियों का सेवन किया जाता है। हरी सब्जियां किसी सुपरफूड से कम नहीं होता है। इन्हें स्टोर करने की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि फ्रिज में रखने से यह जल्दी खराब हो जाती है। अगर आप इन सब्जियों को अच्छे से स्टोर करना चाहते हैं, तो इन टिप्स को जरुर फॉलो करें।

फ्रिज में पालक और मेथी को सड़ने से कैसे बचाएं

पेपर टॉवल : अगर आप भी पालक और लेट्यूस को जल्दी खराब होने से बचाना है, तो इसके लिए पेपर टॉवल की ट्रिक आजमाएं। सबसे पहले सब्जियों से सड़े–गले पत्ते हटा दें। फिर एक कंटेनर में 2 पेपर टॉवल रखकर उसमें सब्जियां अच्छे से लपेटें और स्टोर करें। यह पेपर नमई सूखकर उन्हें सड़ने से बचाएगा, पर पेपर ज्यादा गीला होने पर उसे चेंज कर दें।

धोने के बाद सुखा लें : अक्सर लोगों की आदत होती है कि वो बाजार से सब्जियां लाकर उसे तुरंत धोकर फ्रिज में रख लेते हैं। इसी कारण से उनमें नमी बनी रहती है। इस कारण से हरी सब्जियां जल्दी खराब होती है। जब भी सब्जियों को धोएं, तो उसके पहले हवा में अच्छे से सुखा लें। फिर फ्रिज में रखें।

एयरी पैकिंग बेहतर विकल्प : भूलकर भी सब्जियों को एयरटाइट डिब्बे में न रखें। इसके जगह आप एयरी पैकिंग या जालीदार बैग का तरीका को चूज करें। प्लास्टिक की ऐसी पोलीथीन लें, जिसमें छेद हो जिससे सब्जियों में नमी बाकी न रहे। आप चाहे तो सूती बैग का ऑप्शन को भी चूज कर सकते हैं। ऐसा करने से आप हरी–पत्तेदार सब्जियों को लंबे समय तक खराब होने से बचाया जा सकता है।

डंठल अलग करें : अगर साग की मात्रा अधिक है, तो आप इसे फ्रिज में रखने से पहले सभी जड़ों को अच्छे से काट लें। सड़े–गले और पीले पत्ते भी हटा दें। यह तरीका साग की शेल्फ लाइफ बढ़ाता है।

काटकर रखें : हरी सब्जियों को काटकर भी फ्रिज में रख सकते हैं, यह तरीका थोड़ा लंबा हो सकता है। इसके लिए सब्जियों को पहले धोकर अच्छे से सुखा लें। फिर सब्जियों को काटकर अलग रखें। इसके बाद बर्तन में पेपर टॉवल या सूती कपड़ा बिछाएं। फिर कटी सब्जियों को इसमें रखकर ठीक से ढक देना है। यह तरीका सब्जियों की एक्स्ट्रा नमी सोखकर लंबे समय तक फ्रेश बनाए रखता है।

संक्षिप्त



गरीबी उन्मूलन के लिए डिजिटल अर्थव्यवस्था और बाजार तक व्यापक पहुंच जरूरी : निर्मला सीतारमण

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि गरीबी खत्म करने और इससे बाहर निकले लोगों को वापस गरीबी में जाने से रोकने के लिए वित्त, बाजार और डिजिटल अर्थव्यवस्था तक व्यापक पहुंच जरूरी है। वित्त मंत्री ने विश्व बैंक की एक रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसमें 2011 और 2023 के बीच लगभग 50 करोड़ भारतीयों के गरीबी से बाहर निकलने की बात कही गई है। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार ने अभावों को दूर करने के लिए लक्षित कदमों, स्पष्ट नतीजों और जरूरत के हिसाब से तैयार योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है। सीतारमण ने लिंक्डइन पर पोस्ट किया, गरीबी केवल आय या मजदूरी की कमी नहीं है। एक सुरक्षित छत, साफ पानी, स्वच्छता या स्वास्थ्य सेवाओं के बिना कोई भी परिवार आय बढ़ने के बाद भी असुरक्षित बना रहता है। एक बीमारी सारी बचत खत्म कर सकती है और परिवार को वापस गरीबी में धकेल सकती है। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन, आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना, उज्ज्वला योजना और स्वच्छ भारत जैसी कल्याणकारी योजनाएं मिलकर इन जोखिमों के खिलाफ कवच का काम कर रही हैं, जो कभी परिवारों को वापस गरीबी में धकेल देते थे। साथ ही इनसे घरेलू खर्च में कमी आ रही है और समय भी बच रहा है। सीतारमण ने कहा, अगला चरण इस प्रगति को आगे बढ़ाते हुए उन कुछ लोगों को भी गरीबी से बाहर निकालने का है जो अब भी सबसे निचले पायदान पर हैं। साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि जो लोग पहले ही ऊपर उठ चुके हैं, वे आगे बढ़ते रहें और कभी पीछे न फिसलें। विभिन्न उपायों के जरिये दी गई सुरक्षा के साथ अब वित्त, बाजार और डिजिटल अर्थव्यवस्था तक और भी व्यापक पहुंच की जरूरत है। विकसित भारत के सामने मौजूद चुनौतियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार रोजगार से जुड़े प्रोत्साहन, इंटर्नशिप और अप्रेंटिसशिप के जरिये शिक्षा जगत और उद्योग के बीच बेहतर तालमेल बना रही है, जबकि बुनियादी ढांचे में सरकारी निवेश देश को जोड़ रहा है। अवसर केवल कुछ लोगों तक सीमित नहीं रह सकते।

ब्रुकफील्ड 1.7 अरब डॉलर में खरीदेगी ब्लैकस्टोन से पीजीपी ग्लास

वैश्विक निवेश कंपनी ब्रुकफील्ड ने खास तरह की कांच पैकेजिंग बनाने वाली कंपनी पीजीपी ग्लास का ब्लैकस्टोन से 1.7 अरब अमेरिकी डॉलर में अधिग्रहण करने पर सहमति जताई है। संबंधित कंपनियों ने सोमवार को एक संयुक्त बयान में यह जानकारी दी। इस सौदे के 2027 की पहली तिमाही में पूरा होने की उम्मीद है। हालांकि, इसके लिए नियामकीय और सरकारी मंजूरियों सहित अन्य जरूरी शर्तें पूरी करनी होंगी। पीजीपी ग्लास सौंदर्य प्रसाधन, इत्र, खाद्य एवं पेय पदार्थ और दवा उद्योगों के लिए विशेष डिजाइन वाली कांच की बोतलें और कंटेनर बनाती है। कंपनी 70 से अधिक देशों में प्रमुख वैश्विक ब्रांडों को अपनी सेवाएं देती है। इसके भारत और श्रीलंका में तीन विनिर्माण संयंत्र हैं। ब्रुकफील्ड ने कहा कि वह कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित बदलाव कार्यक्रम के जरिये कंपनी की वृद्धि के अगले चरण को गति देगी। इसके तहत बिक्री एवं परिचालन योजना, उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता नियंत्रण में सुधार पर ध्यान दिया जाएगा। ब्रुकफील्ड के एशिया प्रशांत और पश्चिम एशिया में निजी इक्विटी कारोबार के प्रमुख आदित्य जोशी ने कहा कि कंपनी की वैश्विक पहुंच और परिचालन विशेषज्ञता पीजीपी ग्लास की वृद्धि को तेज करने में मदद करेगी। ब्लैकस्टोन ने कहा कि उसके स्वामित्व के दौरान पीजीपी ग्लास ने अपनी उत्पादन क्षमता का विस्तार किया और परिचालन को मजबूत किया है। पीजीपी ग्लास के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) विजय शाह ने कहा कि ब्रुकफील्ड की वैश्विक मौजूदगी और विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों में कारोबार चलाने का अनुभव कंपनी की वृद्धि और मूल्यवर्धन में मदद करेगा। ब्लैकस्टोन के अनुसार, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में कांच की पैकेजिंग बनाने वाली कंपनियों पर लागत का दबाव बढ़ने और उत्पादन क्षमता के युक्तिकरण से पीजीपी ग्लास के लिए बाजार में अपनी मौजूदगी बढ़ाने के अवसर पैदा हुए हैं।

भारत की GDP 7 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ेगी, एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स का अनुमान

देश की अर्थव्यवस्था चालू और अगले वित्त वर्ष में सात प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है। इसके साथ ही भारत 2027 में एशिया–प्रशांत क्षेत्र की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में बना रहेगा। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने सोमवार को यह अनुमान जताया। एसएंडपी ने कहा कि अल नीनो के कारण एशिया–प्रशांत क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं, विशेषकर भारत में खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ने की आशंका है। इसे देखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) दिसंबर में नीतिगत ब्याज दर में 0.25 प्रतिशत की एक और बढ़ोतरी कर सकता है। एसएंडपी की एशिया–प्रशांत क्षेत्र के आर्थिक परिदृश्य पर जारी रिपोर्ट के अनुसार, ऊर्जा की ऊंची कीमतें क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनी रहेंगी, जबकि कृत्रिम मेधा (एआई) के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर बढ़ता निवेश सबसे बड़ा सकारात्मक कारक होगा। हालांकि, 2027 में इन दोनों कारकों का प्रभाव कुछ कम होने की उम्मीद है। एसएंडपी ने कहा, ''हमें उम्मीद है कि वियतनाम और भारत 2027 में इस क्षेत्र की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाएं होंगी।'' रेटिंग एजेंसी ने चालू और अगले वित्त वर्ष में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर सात प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है। एसएंडपी के मुताबिक, अप्रैल–जून और जुलाई– सितंबर तिमाही में भारत की आर्थिक वृद्धि को वस्तुओं के मजबूत निर्यात, सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश और घरेलू खपत से समर्थन मिला। घरेलू खपत में तेजी की प्रमुख वजह कर्ज की मजबूत वृद्धि रही। भारत 30 नवंबर को जुलाई–सितंबर तिमाही के जीडीपी वृद्धि के आधिकारिक आंकड़े जारी करेगा। इससे पहले, आरबीआई ने पिछले महीने सितंबर तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया था, जबकि वित्त मंत्रालय की मासिक आर्थिक समीक्षा में इसके 7.35 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गई थी।

शुभमन गिल की आईसीसी से अपील, गेंद पर लार के इस्तेमाल प्रतिबंध हटाने पर फिर करे विचार

भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने आईसीसी से गेंद चमकाने के लिए लार के इस्तेमाल पर लगे प्रतिबंध पर पुनर्विचार का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि कोविड काल बीत चुका है और कूकाबुरा गेंद बहुत जल्दी नरम हो जाती है। गिल के अनुसार, गेंद नरम पड़ने से गेंदबाजों के लिए विकेट लेना काफी मुश्किल हो जाता है।

भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने सोमवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से गेंद को चमकाने के लिए लार के इस्तेमाल करने पर लगे प्रतिबंध पर फिर से विचार करने का आग्रह किया और साथ ही कहा कि कूकाबुरा गेंद बहुत जल्दी नरम हो जाती है जिससे गेंदबाजों के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों में गेंदबाजी करना मुश्किल हो जाता है। गिल ने यह टिप्पणी भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहला टेस्ट ड्रॉ रहने के बाद की। पिच से गेंदबाजों को कोई मदद नहीं मिल रही थी जिससे न्यूजीलैंड पहली पारी में 352 रन से पिछड़ने के बावजूद मैच ड्रॉ करने में सफल रहा।

गिल ने मैच समाप्त होने के बाद पत्रकारों से कहा, ''हम कोविड काल से बहुत आगे निकल चुके हैं। एक नियम था कि गेंद को चमकाने के लिए लार का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। अब सात–आठ साल हो गए हैं। मुझे नहीं पता कि वे इसकी अनुमति क्यों नहीं दी जा रही है।'' उन्होंने कहा, ''हमने जो पहली गेंद ली थी वह मुझे लगता है कि 25–30 ओवरों के बाद बहुत नरम हो गई थी। मुझे लगता है उन्होंने (न्यूजीलैंड) भी शिकायत की थी। हमने इंग्लैंड में भी यही देखा था।'' भारतीय कप्तान ने कूकाबुरा गेंद की गुणवत्ता पर सवाल उठाते हुए कहा कि नरम गेंद के बल्ले का किनारा लेकर विकेटकीपर या स्लिप में जाने की संभावना काफी कम हो जाती है। उन्होंने कहा, ''मुझे नहीं पता कि गेंदों की गुणवत्ता



कम हो गई है या क्या हुआ है। लेकिन ऐसी परिस्थितियों में अगर विकेट से कोई मदद न मिले और गेंद भी नरम पड़ जाए तो गेंदबाजों के लिए विकेट लेना बहुत मुश्किल हो जाता है।'' गिल ने कहा कि इस तरह की गेंद बल्ले का किनारा लेकर नहीं जाती जिससे विकेटकीपर और स्लिप क्षेत्र में कैच की संभावना कम हो जाती है। उन्होंने कहा, ''इस तरह की गेंद के बल्ले का किनारा लेने की संभावना बहुत कम होती है। इसलिए विकेटकीपर को कैच देकर आउट होने की संभावना कम हो जाती है। अगर पिच से मदद नहीं मिल रही है तो एलबीडब्ल्यू करना भी आसान नहीं होता है।'' गिल का मानना है कि लार की अनुमति देने से टीमों को गेंद को लंबे समय तक अच्छी स्थिति में रखने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा, ''जहां तक लार का सवाल है तो मुझे लगता है कि टीमों को इसका इस्तेमाल करने की अनुमति मिलनी चाहिए। यह नियम कोविड के दौरान लागू किया गया था। हम उस दौर से बहुत आगे निकल चुके हैं।''

न्यूजीलैंड के खिलाफ पहला टेस्ट ड्रॉ, डब्लूटीसी फाइनल के लिए टीम इंडिया को जीतने होंगे सभी मैच

वेलिंगटन के बेसिन रिजर्व में भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहला टेस्ट ड्रॉ पर समाप्त हुआ। इस ड्रॉ के बाद WTC स्टैंडिंग्स में भारत 50 के PCT के साथ चौथे स्थान पर बना हुआ है। अब WTC फाइनल में जगह बनाने के लिए भारत को अपने बचे हुए सभी मुकाबले जीतने होंगे।

भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच चल रही सीरीज़ का पहला टेस्ट ड्रॉ पर खत्म हुआ। दोनों टीमें 19 नवंबर से वेलिंगटन के बेसिन रिज़र्व में आमने–सामने थीं। पाँच दिनों के कड़े संघर्ष के बाद, जब भारत दूसरी पारी में न्यूज़ीलैंड को ऑल आउट नहीं कर सका, तो यह मुक़ाबला ड्रॉ हो गया। दिलचस्प बात यह है कि इस ड्रॉ के बाद, भारत के लिए ब्ब्ज फ़ाइनल में जगह बनाना और भी मुश्किल हो गया है। अगर भारत को ब्ब्ज के फ़ाइनल में पहुँचना है, तो उन्हें अपने बचे हुए सभी मैच जीतने होंगे।

वेलिंगटन में हुए इस ड्रॉ के कारण, WTC स्टैंडिंग में भारत चौथे स्थान पर बना हुआ है। हालाँकि भारत स्टैंडिंग में चौथे स्थान पर तो है, लेकिन उनका PCT गिरकर 50 हो गया है, जिससे फ़ाइनल में पहुँचने की उनकी उम्मीदों को और झटका लगा है। वहीं, न्यूज़ीलैंड की टीम टॉप–2 से बाहर हो गई है और उनका च्ब्ज गिरकर 66.66 पर आ गया है।

इसके अलावा, 75 के च्ब्ज के साथ दक्षिण अफ्रीका स्टैंडिंग में सबसे ऊपर बना हुआ है। दोनों टीमों के बीच चल रही सीरीज के दूसरे टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका का मुकाबला बांग्लादेश से होना है, ऐसे में प्रोटियाज अपनी शीर्ष स्थिति को और मजबूत करने की कोशिश करेंगे। भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच खेले गए मैच की बात करें तो, पहली पारी में 368 रन खाने के बाद, भारत ने बल्लेबाज़ी करते हुए 720 रन बनाए और 352 रनों की बढ़त के साथ पारी घोषित कर दी। इस दौरान केएल राहुल और ऋषभ पंत ने शतक लगाए, जबकि शुभमन गिल, ध्रुव जुरेल, यशस्वी जायसवाल और अंशुल कंबोज ने भी अपनी बल्लेबाज़ी से प्रभावित किया।



दूसरी पारी में जब न्यूज़ीलैंड बल्लेबाज़ी करने उतरी, तो उसने शुरुआत में ही कुछ विकेट गंवा दिए, लेकिन ग्लेन फिलिप्स और डेरिल मिशेल की जोड़ी ने टीम को संभाले रखा।

पांचवें दिन का खेल खत्म होने तक न्यूज़ीलैंड ने 5 विकेट के नुकसान पर 239 रन बना लिए थे। इसके बाद दोनों टीमों ने हाथ मिलाया और मैच ड्रॉ पर समाप्त हुआ।

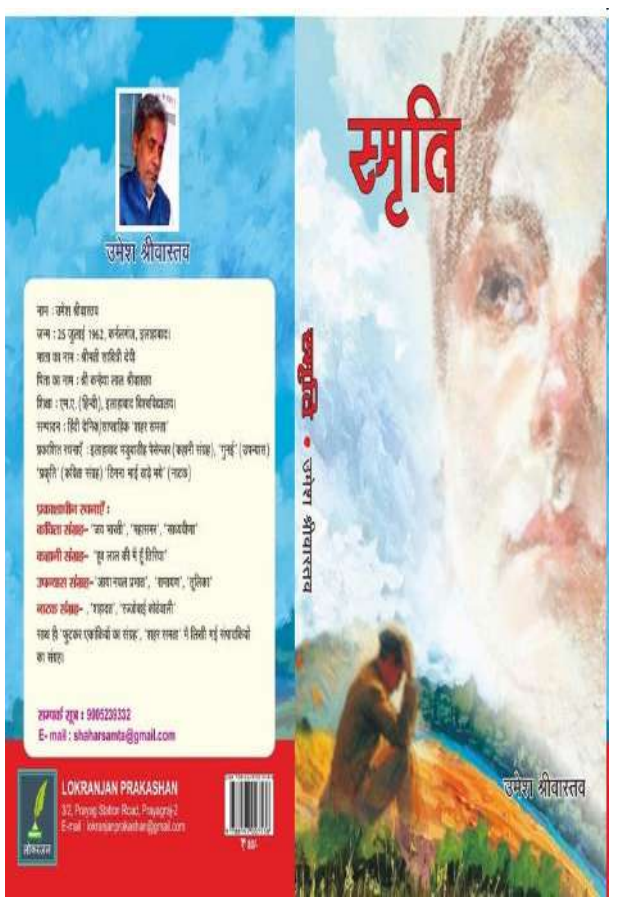

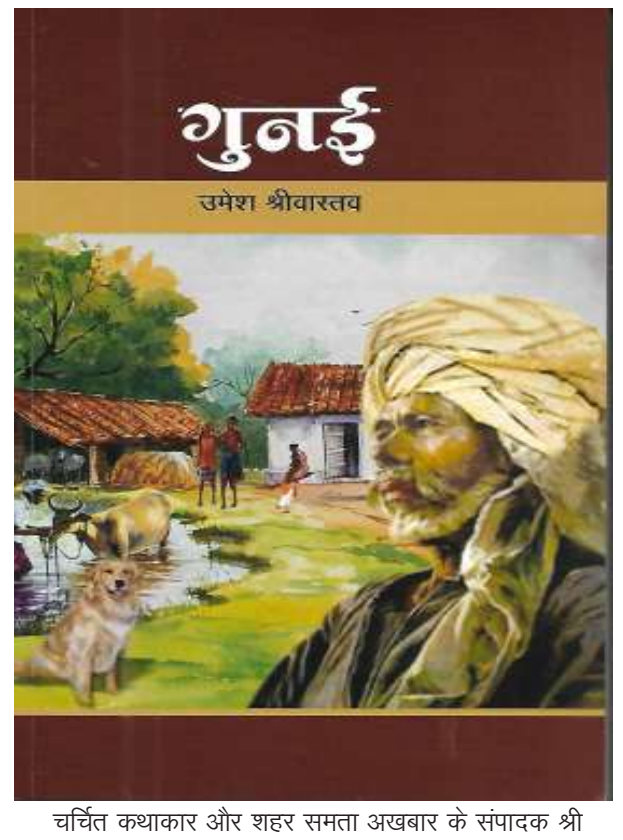

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

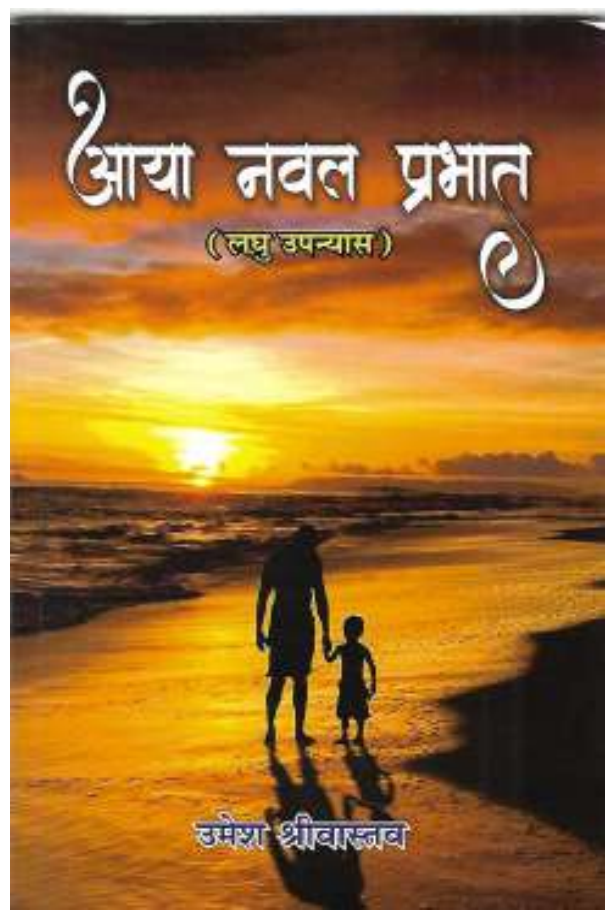

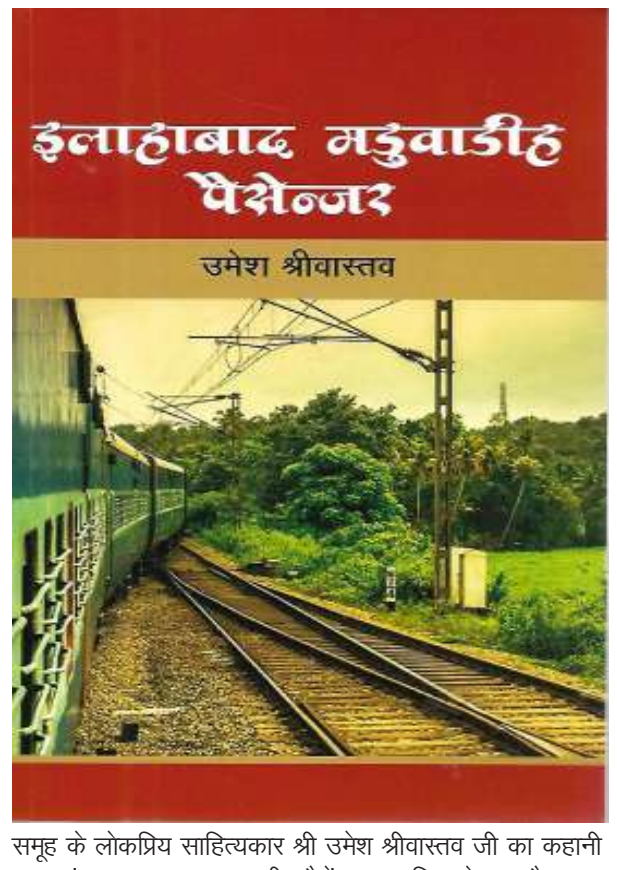

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

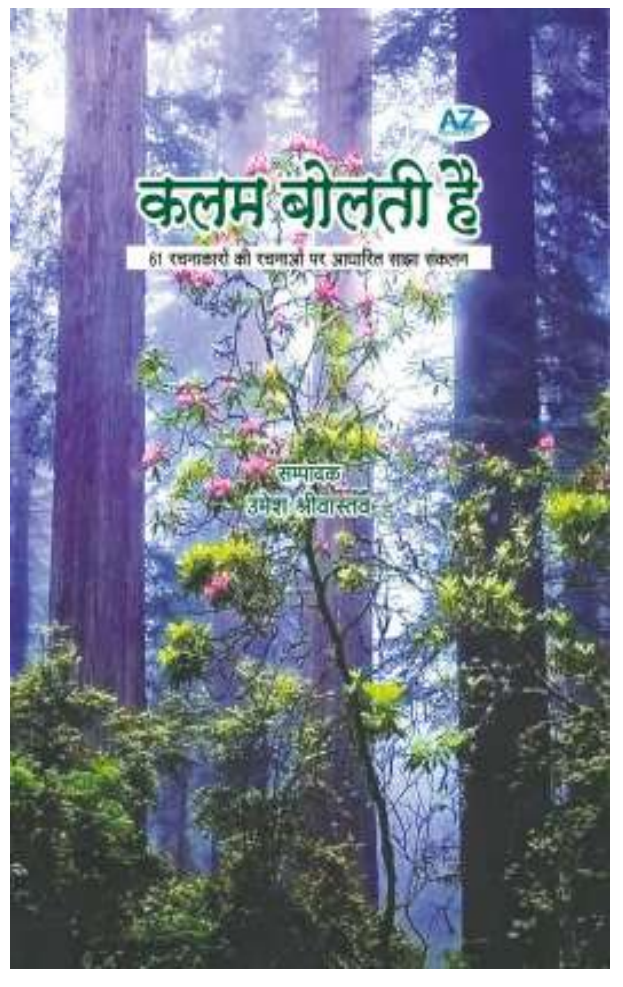

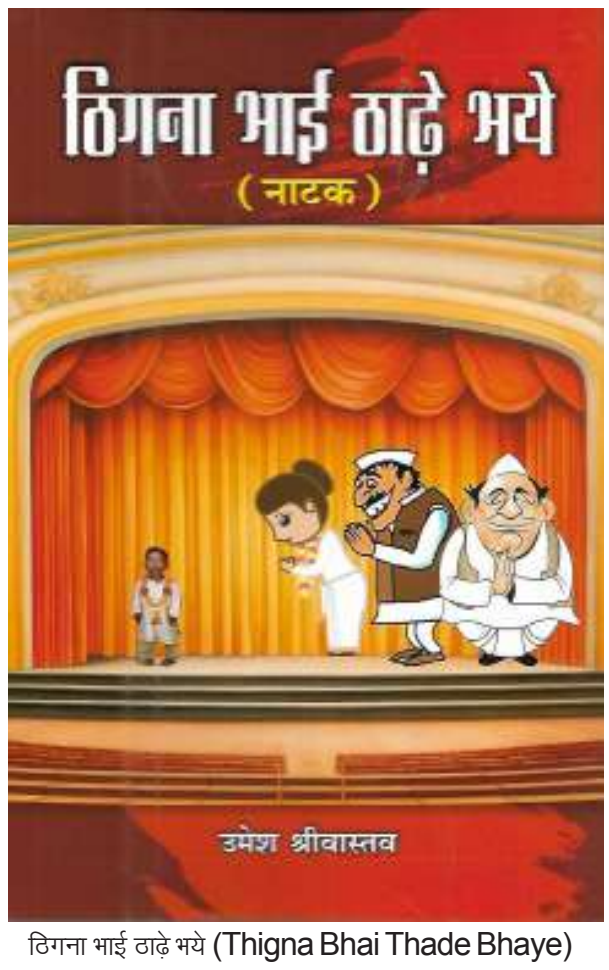

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

इंडोनेशिया की कैंडी फैक्टरी में लगी भीषण आग, मलबे से 24 बैग में मिले मानव अवशेष

इंडोनेशिया में कैंडी फैक्टरी में लगी भीषण आग के बाद लापता 34 कर्मचारियों की तलाश में जुटे बचाव दल ने रविवार को मलबे से मानव अवशेष बरामद किए और इन अवशेषों को 24 'बॉडी बैग' में रखा गया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। हालांकि, मृतकों की संख्या की पुष्टि करना अभी जल्दबाजी होगी। राष्ट्रीय खोज एवं बचाव एजेंसी ने पहले कहा था कि आग में कम से कम तीन कर्मचारियों की मौत हुई है। हालांकि, अपने ताजा बयान में एजेंसी ने कहा कि बरामद मानव अवशेषों और शरीर के अंगों की फॉरेंसिक जांच तथा पहचान की प्रक्रिया अभी बाकी है। बांटेन प्रांत में पीटी फोनुसा अगुंग मुलिया फैक्टरी में लगी आग पर रविवार को काफी हद तक काबू पा लिया गया था, लेकिन कुछ हिस्सों तक अब भी पहुंचना संभव नहीं हो पाया। आग शनिवार शाम करीब पांच बजे लगी थी। इसके बाद बांटेन प्रांत के सेरांग जिले में स्थित तीन मंजिला इमारत आग की लपटों से घिर गई। यह प्रांत राजधानी जकार्ता से सटा हुआ है। बांटेन खोज एवं बचाव एजेंसी के संचालन अधिकारी रिज्की द्वियांतो ने बताया कि आग लगने के 12 घंटे से अधिक समय बाद भी फैक्टरी के कई हिस्सों में आग बुझाने के लिए 15 दमकल गाड़ियां तैनात थीं। घटनास्थल पर पुलिस, सेना, इंडोनेशियाई रेड क्रॉस और स्वयंसेवकों समेत बचाव दल मौजूद था। आग से बुरी तरह क्षतिग्रस्त इमारत के फर्श पर मलबा बिखरा हुआ था। आग लगने के कारणों का तत्काल पता नहीं चल पाया। स्थानीय मीडिया की खबरों के अनुसार, इस घटना में जीवित बचे कर्मचारियों ने बताया कि आग तीसरी मंजिल पर लगी एक कूलिंग यूनिट से शुरू हुई थी। यह फैक्टरी मिल्किता ब्रांड की कैंडी और स्नैक उत्पाद बनाती है। यह इंडोनेशिया का दूध से बने उत्पादों का ब्रांड है, जिसके उत्पाद दुनिया के 40 से अधिक देशों में निर्यात किए जाते हैं। कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी स्टीवन विजय ने रविवार को सेरांग में अधिकारियों के साथ संयुक्त प्रेस वार्ता में बताया कि फैक्टरी परिसर में करीब 300 कर्मचारी मौजूद थे। इनमें से आग लगने के समय 65 कर्मचारियों के प्रभावित क्षेत्र में होने की आशंका है। उन्होंने कहा कि रविवार दोपहर तक 24 कर्मचारी अपने घर लौट चुके थे। विजय ने कहा, हम इस त्रासदी से बेहद चिंतित हैं। लापता परिवार के सदस्यों के बारे में जानकारी चाहने वाले रिश्तेदारों के लिए हमने एक हेल्पलाइन शुरू की है और प्रभावित परिवारों के साथ नियमित संपर्क बनाए हुए हैं। उन्होंने बताया कि फैक्टरी में स्थानीय दमकलकर्मियों के सहयोग से नियमित रूप से आपातकालीन और निकासी अभ्यास किए जाते थे। उन्होंने कहा कि परिसर में पर्याप्त निकासी मार्ग एवं अग्नि सुरक्षा प्रणालियां थीं जो आग लगने के समय काम कर रही थीं। रविवार देर रात जारी एक बयान में अधिकारियों ने कहा कि आग लगने के समय उस क्षेत्र में 63 लोगों के मौजूद होने की आशंका थी। इनमें से 29 लोगों के जीवित होने की पुष्टि हुई है। इनमें पांच घायल कर्मचारी अस्पताल में भर्ती हैं, जबकि 34 कर्मचारी अब भी लापता हैं। इंडोनेशिया में हाल के वर्षों में औद्योगिक इकाइयों में आग लगने की कई घातक घटनाएं हुई हैं। इन घटनाओं ने देश की विनिर्माण इकाइयों में कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों और आपात स्थितियों से निपटने की तैयारियों को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं।

आयोवा में विस्फोटक रसायनों को नष्ट करने आयोवा लेगी आपात नियमों का सहारा

अमेरिकी सेना ने बम बनाने में इस्तेमाल होने वाले कई टन रसायनों को आयोवा प्रांत में विस्फोट के जरिए नष्ट करने की योजना पर लगी अदालती रोक से बचने के लिए आपातकालीन प्रावधानों का सहारा लेने का फैसला किया है। सेना का कहना है कि ठंड बढ़ने के साथ इन रसायनों से खतरा और गंभीर हो सकता है तथा कार्रवाई में लगातार देरी से जोखिम बढ़ेगा। दरअसल मार्च में आयोवा स्थित सेना के गोला–बारूद निर्माण संयंत्र के कर्मचारियों को खराब हो चुके 'लेड एजाइड' नामक रसायन से भरे कई दर्जन ड्रम मिले थे। 'लेड एजाइड' एक अत्यंत संवेदनशील और विस्फोटक रासायनिक पदार्थ है, जिसमें सीसा होता है। इसका इस्तेमाल गोला–बारूद और विस्फोटकों में विस्फोट शुरू करने के लिए किया जाता है। इस पदार्थ में क्रिस्टल बनने की प्रक्रिया ने इसे अत्यधिक अस्थिर और खतरनाक बना दिया था। इसके बाद सेना ने रसायन विज्ञान, इंजीनियरिंग और पर्यावरण सुरक्षा के विशेषज्ञों की एक टीम गठित की ताकि इसे सुरक्षित तरीके से नष्ट करने की योजना तैयार की जा सके।

अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (ईपीए) के दस्तावेजों के अनुसार, ड्रमों में मौजूद रसायनों को अन्य रासायनिक पदार्थों की मदद से निष्क्रिय करने या विघटित करने जैसे विकल्पों पर भी विचार किया गया था। हालांकि, अधिकारियों का कहना है कि ड्रमों को संभालने या उनमें मौजूद सामग्री को निकालने से दुर्घटनावश जानलेवा विस्फोट होने की आशंका बढ़ सकती है। सरकारी वकीलों ने शनिवार देर रात अमेरिका की आठवीं सर्किट अपीलीय अदालत में दाखिल एक दस्तावेज में कहा, ''अपने कर्मियों और आसपास के समुदायों की सुरक्षा के लिए सेना को तत्काल कदम उठाने की जरूरत है। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है। इसमें और देरी नहीं होनी चाहिए।'' हालांकि, पर्यावरण संरक्षण संगठनों ने सरकार के इस कदम की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि यह अदालती आदेश को दरकिनार करने और सुरक्षा तथा पारदर्शिता को लेकर जनता की मांगों से बचने का प्रयास है।

ईरान के साथ स्थायी समझौता करेंगे डोनाल्ड ट्रम्प, परमाणु हथियार हासिल नहीं करने देंगे



अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शनिवार को कहा कि ईरान के साथ होने वाला कोई भी संभावित समझौता स्थायी होगा, जिसका मकसद तेहरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकना है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वे ईरान के साथ एक ऐसा समझौता चाहते हैं जो वास्तविक और स्थायी हो। ट्रम्प ने कहा कि मैं एक ऐसा समझौता करने जा रहा हूँ जो स्थायी होगा। मैं उन्हें परमाणु हथियार हासिल नहीं करने दूँगा। उन्होंने यह पक्का करने का अपना दृढ़ संकल्प जताया कि ईरान परमाणु हथियार विकसित न कर पाए। फॉक्स न्यूज़ के साथ एक साक्षात्कार में ट्रम्प ने यह भी कहा कि उन्हें ईरान में सत्ता परिवर्तन (रेजीम चेंज) में कभी कोई खास दिलचस्पी नहीं रही। साथ ही, उन्होंने ईरान के शीर्ष नेतृत्व पर किए गए अपने हमलों को ईरानी शासन के लिए एक बड़ा बदलाव बताया। उन्होंने ईरान के नए नेतृत्व को अधिक तर्कसंगत बताया, लेकिन बातचीत में उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि तेहरान का इतिहास रहा है कि वह समझौते तो करता है, लेकिन बाद में उन्हें तोड़ देता है। ये ताज़ा बयान वाशिंगटन और तेहरान के बीच जारी तनाव के बीच आए हैं। ट्रम्प ने बार–बार उन शर्तों पर असंतोष जताया है, जिन्हें ईरान बातचीत के दौरान पेश करने के लिए तैयार रहा है। इससे पहले शुक्रवार को, चीन की अपनी यात्रा के बाद, ट्रम्प ने तेहरान की कड़ी आलोचना की। उन्होंने ईरान पर दशकों से लोगों को गुमराह करने का आरोप लगाया और जोर देकर कहा कि वाशिंगटन के साथ होने वाला कोई भी समझौता अमेरिकी उम्मीदों के अनुरूप होना चाहिए। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए, अमेरिकी राष्ट्रपति ने पेट्रोल की कीमतों में उतार–चढ़ाव को ईरान के साथ बातचीत के नतीजों से जोड़ा। उन्होंने तर्क दिया कि तेहरान एक समझौता तो करना चाहता है, लेकिन उसने ऐसी शर्तें पेश नहीं की हैं जो उन्हें स्वीकार्य हों। ट्रम्प ने कहा पेट्रोल की मौजूदा कीमतें इस बात पर भी निर्भर करती हैं कि हम ईरान के साथ किस तरह का समझौता करते हैं। वे एक डील करना चाहते हैं, लेकिन वे ऐसी डील नहीं करना चाहते जो मुझे स्वीकार्य हो। हम एक वास्तविक समझौता करना चाहते हैं, न कि कोई दिखावटी समझौता, जैसा कि वे पिछले 51 सालों से करते आ रहे हैं। अब 47 साल नहींकृलोग 47 साल की बात करते हैं, लेकिन असल में यह 51 साल है।

अल नीनो के असर से हिंदुकुश हिमालय में बढ़ेगा बाढ़ और हिमस्खलन का संकट

ICIMOD की रिपोर्ट में चेतावनी



काठमांडू। अल नीनो के प्रबल प्रभाव के कारण हिंदुकुश हिमालय क्षेत्र के कुछ हिस्सों में सामान्य से अधिक बारिश हो सकती है जिससे सर्दियों के दौरान नेपाल में बाढ़, भूस्खलन और हिमस्खलन का खतरा बढ़ने की आशंका है। एक रिपोर्ट में यह आशंका जताई गई है। काठमांडू स्थित अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र (आईसीआईएमओडी), 'बीजिंग नॉर्मल यूनिवर्सिटी' और चीनी विज्ञान अकादमी के वायुमंडलीय भौतिकी संस्थान ने संयुक्त रूप से 'हिंदुकुश हिमालय विंटर आउटलुक 2026' रिपोर्ट तैयार की है। इसमें नेपाल, अफगानिस्तान और बांग्लादेश समेत कई देशों में सामान्य से अधिक बारिश होने का अनुमान जताया गया है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि भारी बारिश और बर्फबारी के कारण पश्चिमी हिमालय के कुछ इलाकों में बाढ़, भूस्खलन और हिमस्खलन की घटनाएं हो सकती हैं। वहीं, इस क्षेत्र के कुछ हिस्सों में लंबे समय तक शुष्क मौसम रहने और जंगलों में आग लगने का खतरा बढ़ सकता है। यह रिपोर्ट ऐसे समय आई है, जब अमेरिका के राष्ट्रीय महासागरीय एवं वायुमंडलीय प्रशासन (एनओएए) ने अल नीनो का प्रभाव प्रबल से अत्यंत प्रबल रहने की जानकारी दी है। प्रशासन के अनुसार, लगभग 60 प्रतिशत संभावना है कि अल नीनो का प्रभाव 1950 में रिकॉर्ड रखे जाने की शुरुआत के बाद से सबसे अधिक प्रबल हो सकता है। आईसीआईएमओडी के वैज्ञानिकों ने कहा कि इस मौसमी घटना के कारण हिमालय की तलहटी में अधिक बारिश और ऊंचाई वाले इलाकों में अधिक बर्फबारी हो सकती है। यह रिपोर्ट नेपाल और भूटान में मानसून के दौरान आई विनाशकारी आपदाओं के बाद सामने आई है। इन आपदाओं का संबंध ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में हिमनद और स्थायी रूप से जमी रहने वाली जमीन (पर्माफ्रॉस्ट) में हो रहे बदलावों से था। अगस्त में नेपाल में आई विनाशकारी भोटेकोशी बाढ़ में कम से कम 1,500 लोगों की मौत हो गई थी और 5,000 से अधिक लोग लापता हो गए थे। अनुमान है कि राहत और पुनर्निर्माण कार्यों पर देश को 4.7 अरब अमेरिकी डॉलर खर्च करने की जरूरत है। रिपोर्ट में अफगानिस्तान, पाकिस्तान, उत्तरी भारत और नेपाल के कुछ हिस्सों में बर्फ की सामान्य से अधिक मोटी परत जमने का अनुमान जताया गया है, जबकि भूटान और चीन के पूर्वी शिजांग के कुछ इलाकों में बर्फ की परत सामान्य से पतली रहने की संभावना है। रिपोर्ट के अनुसार, बर्फ की परत की मोटाई नदियों में पानी का प्रवाह बनाए रखने और अगले वर्ष पानी की उपलब्धता तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बर्फ की परत कम मोटी होने से सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और प्राकृतिक जलस्रोतों से पानी के प्रवाह पर असर पड़ सकता है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है, ''सर्दियों में अधिक बारिश होने का मतलब यह नहीं है कि जंगलों में आग लगने का खतरा नहीं रहेगा। हिंदुकुश हिमालय क्षेत्र के अन्य हिस्सों में लंबे समय तक शुष्क मौसम रहने की आशंका है जिससे घास और अन्य वनस्पतियां इतनी सूख सकती हैं कि उनमें आसानी से आग लग जाए।'' रिपोर्ट में दक्षिण–पूर्वी शिजांग और म्यांमा के कुछ हिस्सों में जंगलों और घास के मैदानों में आग लगने की आशंका अधिक से बहुत अधिक जताई गई है। आईसीआईएमओडी के जलविज्ञानी मनीष श्रेष्ठ ने कहा, ''आपदाओं से निपटने की तैयारी केवल मानसून तक सीमित नहीं होनी चाहिए। बारिश का समय और उसकी तीव्रता लगातार बदल रही है। ऐसे में स्थानीय अधिकारियों को तैयारियों की योजना बनाने के लिए मौसम के पूर्वानुमान और कब तथा कहां कदम उठाने हैं, यह तय करने के लिए स्थानीय स्तर पर अगले कुछ दिनों के मौसम की जानकारी की जरूरत है।'' आईसीआईएमओडी इस रिपोर्ट के निष्कर्षों पर 25 से 27 नवंबर तक काठमांडू में आयोजित होने वाले एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में चर्चा करेगा। सम्मेलन का विषय 'हिंदुकुश हिमालय के हिममंडल के लिए विज्ञान, नीति और क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाना' है।

एआई से नकल रोकने के लिए परीक्षा में सख्ती, साउथ कोरिया के शिक्षा मंत्री को क्यों देना पड़ा इस्तीफा?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की मदद से नकल करने के एक बड़े मामले ने दक्षिण कोरिया की शिक्षा व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया है। इस विवाद और परीक्षा सुरक्षा की तैयारियों में रही खामियों की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए देश के शिक्षा मंत्री चोई क्यो–जिन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है।

क्या है पूरा मामला?

इस पूरे विवाद की शुरुआत एक राष्ट्रीय पेशेवर परीक्षा (टैक्स अकाउंटेंट परीक्षा) में टॉप करने वाले एक उम्मीदवार के कबूलनामे से हुई। उम्मीदवार ने स्वीकार किया कि उसने हिडन कैमरा और एआई सिस्टम का इस्तेमाल करके नकल की थी। उसने प्रश्नपत्र की तस्वीरें खींचकर एआई को भेजीं और अपने स्मार्टफोन पर जवाब हासिल किए, जिसके दम पर उसने 160 में से 159 अंक हासिल किए थे। सुन्युंग परीक्षा से ठीक पहले मचा हड़कंपयह घोटाला दक्षिण कोरिया की सबसे बड़ी और प्रतिष्ठित वार्षिक विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा सुन्युंग से ठीक कुछ दिन पहले सामने आया। हर साल 5 लाख से अधिक छात्र इस 8 से 9 घंटे लंबी परीक्षा में शामिल होते हैं, जो उनके विश्वविद्यालय में दाखिले और भविष्य के करियर की दिशा तय करती है। इस परीक्षा के दिन पूरे देश की दिनचर्या बदल जाती है। अंग्रेजी के लिसनिंग सेक्शन के दौरान उड़ानों का समय बदला जाता है, निर्माण कार्य रोक दिए जाते हैं और शेयर बाजार भी एक घंटे की देरी से खुलता है।

नकल रोकने के लिए उठाए गए अभूतपूर्व कदम

स्मार्ट ग्लासेज (चश्मे) और सूक्ष्म कैमरों के जरिए होने वाली नकल को रोकने के लिए प्रशासन ने इस बार बेहद सख्त और अनोखे सुरक्षा इंतजाम किए। परीक्षा हॉल में प्रवेश से पहले छात्रों के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जमा करा लिए गए। अधिकारियों ने छात्रों के चश्मे, घड़ियां, कॉलर, आस्तीन और यहां तक कि कपड़ों के बटनों तक की जांच की और गुप्त लेंस को ब्लॉक करने के लिए बटनों पर स्टिकर चिपकाए गए। सभी परीक्षार्थियों को अपने चश्मे डेस्क पर रखकर जांच करानी पड़ी। छिपाकर लाए गए मोबाइल फोन पकड़ने के लिए अधिकारियों ने देश भर के फोन पर इमरजेंसी अलर्ट भेजे। ये अलर्ट साइलेंट मोड पर होने के बावजूद फुल वॉल्यूम में बजे।



इतनी कड़ी सुरक्षा के बावजूद परीक्षा के दौरान अनधिकृत इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के इस्तेमाल के 111 मामले सामने आए। इनमें से लगभग आधे मामले इमरजेंसी अलर्ट की वजह से पकड़े गए, जबकि 5 छात्रों को परीक्षा के दौरान सक्रिय रूप से स्मार्ट ग्लास और हिडन कैमरा जैसे उपकरणों का उपयोग करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया। अंतिम समय में नियमों में हुए बदलावों से छात्रों को हुई असुविधा और पहले से पुख्ता तैयारी न कर पाने की आलोचना के बीच शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा, जिसे राष्ट्रपति ली जे–म्युंग ने स्वीकार कर लिया है। तकनीक आधारित नकल केवल दक्षिण कोरिया तक सीमित नहीं है। हाल ही में ताइवान के एक शीर्ष मेडिकल कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में एक छात्र को स्मार्ट ग्लास पहनकर नकल करते पकड़ा गया था, जब परीक्षकों को उसके चश्मे के फ्रेम से गर्मी निकलती महसूस हुई।



चीन का रहस्मयी 18000 लोगों वाला घर, एक ही बिल्डिंग में पूरा शहर, क्या ये संभव है?

क्या आप यकीन करेंगे अगर आपसे कहा जाए की एक ही इमारत में 18,000 से ज़्यादा लोग रहते हैं? हाँ, यह बिल्कुल सच है! 204 मीटर ऊंची और 39 मंजिलों वाली यह इमारत सिर्फ एक अपार्टमेंट परिसर नहीं है, बल्कि अपने आप में पूरा एक शहर है। यहाँ के निवासियों को अपनी ज़रूरत की हर चीज़ इसी इमारत के अंदर स्कूल, सुपरमार्केट, स्विमिंग पूल, जिम, कैफे और यहाँ तक कि सैलून मिल जाती है। 18,000 से अधिक लोगों की आबादी के साथ, यह एक बेहद जीवंत और सक्रिय समुदाय है। एलिसिया लू द्वारा डिज़ाइन की गई यह इमारत एक अनोखी शहरी जीवन शैली को बढ़ावा देती है। यहाँ छोटे स्टूडियो अपार्टमेंट से लेकर बड़े बालकनी वाले आलीशान घर तक शामिल हैं, जिनका किराया लगभग 209 अमेरिकी डॉलर (तकरीबन 17,500 रुपये) प्रति माह से शुरू होता है। रीजेंट इंटरनेशनल सुविधा, समुदाय और विलासिता, सब कुछ एक ही छत के नीचे देने के साथ ही वाकई शहरी जीवन को एक नए रूप में परिभाषित कर रहा है! यह इमारत वास्तव में चीन में मौजूद है। इसका नाम है रीजेंट इंटरनेशनल। चीन के हांगझोऊ शहर में स्थित यह विशाल इमारत इंटरनेट पर अपनी असाधारण बनावट और यहां रहने वाले लोगों की संख्या के कारण पूरी दुनिया का ध्यान खींच चुकी है। रिपोर्टों के अनुसार यहां रहने वाले लोगों की संख्या लगभग 20,000 तक बताई जाती है। लेकिन सवाल यह है कि आखिर एक ही इमारत में इतने सारे लोग रहते कैसे हैं? क्या यहां रहने वाले लोगों को कभी इमारत से बाहर जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती? और सबसे दिलचस्प बात यह है कि इस इमारत को शुरुआत में बनाया ही किस उद्देश्य से गया था? चीन के झेजियांग प्रांत में स्थित हांगझोऊ एक तेजी से विकसित होने वाला आधुनिक शहर है। इसी शहर के कियानजियांग सेंचुरी सिटी इलाके में स्थित है रीजेंट इंटरनेशनल सेंटर। दूर से देखने पर यह इमारत किसी विशाल आधुनिक होटल या किसी अलग शहर जैसी दिखाई देती है। इसकी सबसे खास बात इसका घुमावदार आकार है। इस इमारत का डिजाइन इस तरह तैयार किया गया है कि इसके अलग–अलग हिस्से एक विशाल एस (S) आकार जैसी संरचना बनाते हैं। इसकी ऊंचाई लगभग 208 मीटर बताई जाती है और इसमें अलग–अलग हिस्सों में 36 से 39 मंजिलें हैं। इसका विशाल आकार और एक के बाद एक दिखाई देने वाली बालकनियां इसे दुनिया की सबसे अलग आवासीय इमारतों में शामिल करती हैं। लेकिन इसकी असली कहानी इसकी ऊंचाई से भी ज्यादा दिलचस्प है। क्योंकि यह इमारत शुरुआत से ही हजारों लोगों का घर बनने के लिए नहीं बनाई गई थी। रीजेंट इंटरनेशनल की कहानी समझने के लिए हमें इसके निर्माण के शुरुआती उद्देश्य को जानना होगा। इस विशाल प्रोजेक्ट की कल्पना एक बेहद आलीशान होटल के रूप में की गई थी। यानी इसका उद्देश्य एक ऐसी जगह तैयार करना था, जहां लोगों को शानदार सुविधाएं और आधुनिक जीवनशैली मिल सके।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

